मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

हमारा लोकतान्त्रिक अधिकार

''मैं यह कहना चाहता हूं कि मुसलमान यदि मुस्लिम पर्सनल लॉ में बदलाव स्वीकार कर लेंगे तो वे आधे मुसलमान रह जायेंगे तथा इसके बाद ख़तरा है कि आधे मुसलमान भी न रहें..... इसलिए हम इस बात की बिल्कुल आज्ञा नहीं दे सकते कि हमारे ऊपर कोई दूसरी सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था तथा पारिवारिक क़ानून थोपा जाये। हम इसको इरतदाद (धर्म से हट जाना) की दावत समझते हैं और हम इसका उसी तरह मुक़ाबला करेंगे जिस तरह इरतदाद की दावत का मुक़ाबला किया जाना चाहिये तथा यह हमारा नागरिक, लोकतान्त्रिक तथा धार्मिक अधिकार है तथा भारत का संविधान तथा लोकतान्त्रिक देश का क़ानून न केवल इसकी इजाज़त देता है बल्कि प्रोत्साहित करता है कि लोकतन्त्र का स्थायित्व, अपने अधिकारों की सुरक्षा तथा अभिव्यक्ति की आज़ादी तथा हर समुदाय तथा अल्पसंख्यक वर्ग की संतुष्टि में निहित है।''

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

FEB 18

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

मुस्लिम पर्सनल लॉ - सुरक्षा कैसे संभव है?

१. सबसे पहला उपाय यह है कि शरई क़ानून पर मुसलमान ख़ुद अमल करें। निकाह, तलाक़, विरासत, हिबा, वसीयत और इसी तरह के शरई एहकाम पर अगर मुसलमान अमल न करें या उसके ख़िलाफ़ अमल करें तो फिर मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहफ़्फ़ुज़ और शरई दारुल कज़ा की मांग वह किस बुनियाद पर करेंगे और उनकी कोशिश मुअस्सिर किस तरह होगी? उलमा और मुस्लिम तन्ज़ीमों के रहनुमा, अहले इल्म और अख़बारात व रसाएल को पूरी कोशिश करनी चाहिये कि जहां कहीं भी मुसलमान शरीअत के ख़िलाफ़ मक़ामी रस्म व रिवाज या ख़ानदानी रिवायत पर अमल कर रहे हैं वे उसे तर्क कर दें और शरीअत के क़ानून पर अमल शुरू कर दें।

२. लोक सभा, राज्य सभा और रियासती एसेम्बलियों के मुसलमान मेम्बरों को इस बात पर आमादा करना चाहिये कि वे मुस्लिम पर्सनल लॉ की सुरक्षा और दारुल कज़ा की स्थापना की मांग में मुसलमानों का साथ दें और मुसलमानों से मुताल्लिक़ हर ऐसे बिल की मुख़ालिफ़त करें जो शरीअत के किसी क़ानून के ख़िलाफ़ हो।

३. ऐसे तमाम इन्साफ़ पसंद ग़ैरमुस्लिमों का सहयोग हासिल करना चाहिये जो संविधान में अल्पसंख्यकों को दिये हुए हुक़ूक के हामी हैं और जो मुसलमानों के मज़हबी मामलात में हुकूमत का दख़ल पसंद नहीं करते, इसी तरह ईसाईयों और दूसरे अल्पसंख्यक वर्गों को भी साथ लेना चाहिये जिनके पर्सनल लॉ कॉमन सिविल कोड की ज़द में आ जायेंगे।

४. मुसलमान औरतों को ख़ासकर इस जद्दोजहद में हिस्सेदार बनाना चाहिये, क्योंकि आम तौर पर उन्हीं के पीड़ित होने का नारा लगाकर मुस्लिम पर्सनल लॉ में तब्दीली का नारा पैदा किया जाता है। इस सिलसिले में कुछ कोशिशें भी हुई हैं और बहुत से बड़े शहरों में अहम इज्तिमे (सभाएं) मुनअक़िद हो चुके हैं। लेकिन उन्हीं पर संतोष करना सही नहीं होगा, क्योंकि हमें अपनी जद्दोजहद उस वक़्त तक जारी रखनी होगी, जब तक कि हुकूमत हमारी मांगे मान न ले।

५. मुस्लिम पर्सनल लॉ की इस्लाम धर्म में क्या अहमियत है, उसको तमाम मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों को बताते रहना चाहिये। जहां तक तालीम याफ़्ता मुसलमानों परउसे वाज़ेह करने का ताल्लुक़ है इस पर ख़ासा काम हुआ है, बहुत सी किताबें, पम्फ़लेट, मज़ामीन, और अख़बारात व रसाएल पर मुस्लिम पर्सनल लॉ नम्बर शाया हो चुके हैं।

इस सिलसिले में यह बात भी वाज़ेह करते रहने की ज़रूरत है कि जिन शरई क़वानीन के मजमूए को पर्सनल लॉ कहा जाता है वह अंग्रेज़ों के बनाये हुए नहीं हैं। बल्कि अल्लाह तआला ने उसे अपनी किताब कुरआन मजीद में नाज़िल किया है। इस वज़ाहत की ज़रूरत यूं है कि जो लोग मुस्लिम पर्सनल लॉ में तब्दीली चाहते हैं, वे मुसलमानों को यह मुग़ालते भी दे रहे हैं कि मुसलमानों के लिये मुस्लिम पर्सनल लॉ अंग्रेज़ों ने बनाया था, लिहाज़ा इसमें तब्दीली करना दीन में मुदाख़िलत नहीं है। यह बावर करना बहुत मुश्किल हो गया है कि वे लोग इतनी बात न जानते हों कि मुसलमानों के शख़्सी क़ानून के लिये अंग्रेज़ी ज़बान में सिर्फ़ मुस्लिम पर्सनल लॉ की इस्तेलाह वज़अ की गयी है। अंग्रेज़ों ने यह क़ानून नहीं बनाये हैं, क्या वे लोग यह मानते हैं कि मुसलामनों के लिये मिसाल के तौर पर बीवियों की संख्या का क़ानून अंग्रेज़ों ने बनाया था?अस्ल में जानबूझ कर वे मुसलमानों को धोखा देने की कोशिश कर रहे हैं।

सैय्यद अहमद क़ादरी

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:२ फ़रवरी २०१८ ई० वर्ष:१०

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

देश की चिन्ता.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

कुरआन में वर्णित घटनाओं का उद्देश्य.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यूरोप का वैचारिक व सांस्कृतिक हमला.....५
मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह हसनी नदवी

है वही तेरे ज़माने का इमाम–ए–बरहक़.....८
प्रोफ़ेसर मोहसिन उस्मानी नदवी

अक़्लमन्दी का तक़ाज़ा.....९
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

एकेश्वरवाद क्या है?.....१०
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

दर्स–ए–इबरत.....१३
मौलाना फ़ख़रुल हसन नदवी

जनाज़े के एहकाम.....१४
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

बनी इस्राईल की श्रेष्ठता और उनका परिणाम.....१६
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

तौबा की अहमियत.....१८
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

इस्राईल नामंजूर क्यों?.....१९
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

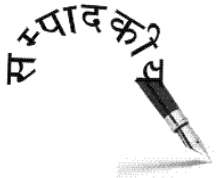

सम्पादकीय

देश की चिन्ता

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिन्दुस्तान की सियासी बड़ी पहचान यह है कि यह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। 26 जनवरी का दिन इसीलिए गणतन्त्र दिवस कहलाता है कि इसी दिन से आज़ाद हिन्दुस्तान एक नये धर्मनिरपेक्ष लोकतान्त्रिक देश की हैसियत से दुनिया के सामने पेश किया गया और यहां के लिये एक ऐसा क़ानून बनाया गया जिसमें यहां की विभिन्न जातियों, धर्मों और सभ्यताओं को समान अधिकार दिया गया। इस दिन से इन्हीं आधारों पर यह देश आगे बढ़ता रहा है।

इसका यह इम्तियाज़ रहा है कि दुनिया की मुख़्तलिफ़ क़ौमों और मज़ाहिब को यहां फलने–फूलने के मौक़े हासिल हुए हैं। इस ज़मीन ने सबको अपने सीने से लगाया। मुहब्बत इसके ख़मीर में दाख़िल रही है। यहां के क़ानून में कमज़ोरों और अक़्लियतों को जो अधिकार दिये गये हैं और हर तबक़े के लोगों को मज़हबी आज़ादी दी गयी है। यह लोकतन्त्र की एक शान रही है, और यह एक हक़ीक़त है। लोकतन्त्र, धर्मनिरपेक्षता तथा अहिंसा यह तीनों इस देश के वे बुनियादें हैं जिन पर देश क़ायम है। और यही इसकी तरक़्क़ी का राज़ है। यह बुनियादें अगर खोखली कर दी गयीं तो पूरा देश ख़तरे में है।

आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों ने इसका जो सांचा–ढांचा तैयार किया था, उसके साथ आज खिलवाड़ किया जा रहा है और अपने हितों के लिये देश के नियमों को पामाल किया जा रहा है। अजीब बात यह है कि यह सब करने वाले वे लोग हैं जिन्होंने देश की आज़ादी के लिये ख़ून का एक क़तरा तक नहीं बहाया और न उन लोगों को कभी देश की आज़ादी व उन्नति की चिंता रही। यही लोग हैं जो आज देश के क़ानून को बदलना चाहते हैं और ऐसा क़ानून लागू करना चाहते हैं जिसमें केवल कुछ प्रतिशत लोगों की भलाई निहित है। बक़िया यहां की पूरी आबादी उनके निशाने पर है। कुछ प्रतिशत लोगों का मक़सद यही है कि बक़िया आबादी को वे अपना गुलाम बनाकर रखें और उनको आज़ाद ज़िन्दगी गुज़ारने का कोई हक़ न रह जाये। यक़ीनन यह सूरतेहाल पूरे देश के लिये बहुत ही गंभीर है।

तीन तलाक़ के मुद्दे पर लोकसभा में पेश किया गया ताज़ा क़ानून इसकी जीती–जागती मिसाल है, जिसमें औरतों से हमदर्दी के नामपर उनके साथ बहुत ही अन्यायपूर्ण रवैया अपनाया गया। तीन तलाक़ के बाद अगर तलाक़ पड़ी ही नहीं तो तलाक़ देने वाले को जेल की सज़ा क्यों और फिर जब वह जेल चला जायेगा तो उसकी बीवी का ख़र्च किसके ज़िम्मे होगा और उसके आगे भी न जाने कितने सवालिया निशान हैं जो उस क़ानून पर लगाये जा सकते हैं।

यह देश जिसने हमेशा मज़लूमों का साथ दिया। आज वह ज़ालिमों और इन्सानियत के क़ातिलों को अपने गले लगा रहा है। वे यहूदी जिनसे इन्सानियत दुश्मनी की पूरी तारीख़ भरी हुई है और जिनके स्वार्थ को देखकर दुनिया के देशों ने उनसे पीछा छुड़ाया और फ़िलिस्तीनी धरती पर उनको थोप दिया गया। आज हमारी सरकार उनको अपना शुभचिन्तक समझ रही है और देश की उन्नति के नाम पर उनसे सौदे किये जा रहे हैं। यह पूरे देश के लिये बहुत ही ख़तरे की बात है। इस समय आवश्यकता यह है कि देश की बुनियादों को मज़बूत किया जाये, न्यायपालिका हर प्रकार से दबावमुक्त हो। और क़ूनन को पूरा वर्चस्व प्राप्त हो। इसका सेक्यूलर ढांचा प्रभावित न हो और उन लोगों से भी होशियार रहने की कोशिश की जाये जो अपने हितों की ख़ातिर सारी दुनिया को अपना गुलाम बनाना चाहते हैं।

यह वे वास्तविकताएं थीं जिसको देश से मुहब्बत रखने वाले हमेशा कहते रहे, लेकिन आज जो हालात पैदा किये जा रहे हैं और नियमों को जिस प्रकार ताक़ पर रखा जा रहा है और अपने हितों की ख़ातिर देश को जिस प्रकार दांव पर लगाया जा रहा है यह बहुत ख़तरे की बात है। इसका एहसास हर उस व्यक्ति को है जो सच्चाई जानता है और देश से सच्चा प्रेम करता है।

कुरआन में वर्णित घटनाओं का उद्देश्य

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

कुरआन मजीद में व्यक्तियों तथा कौमों के हालात का वर्णन वास्तव में इस बात से परिचित कराता है कि इन्सानों को इस दुनिया में जिन्दगी गुज़ारने के लिये यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि उनको बिना किसी वजह के नहीं पैदा किया गया है बल्कि इनके लिये जीवन व्यतीत करने की व्यवस्था बनायी गयी है। उस पर चलने और न चलने का अवसर प्रदान किया गया है। इस पर चलना इताअत (उपासना) और नेकी (पुण्य) है और न चलना अवज्ञा और गुनाह है जिस पर उचित बदल दिया जाता है तथा नबियों को आवश्यकतानुसार भेजा जाता रहा है ताकि वे लोगों को सत्मार्ग बताएं और अपने जीवन से एक उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत करें। आज्ञापालन तथा अवज्ञा के उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये उनको कठोर तथा मृदुल परिस्थितियों से गुज़ारा गया ताकि नमूना सामने आये। उनके हालात व्यक्तिगत मामलों में भी प्रकट किये गये और रसूल व नबी की हैसियत से उनकी क़ौमों के क़ौमी मामलों के सिलसिले में उनकी रहनुमाई भी मिसाल के तौर पर प्रकट की गयी। जातिगत स्तर पर विशेषतयः बनी इस्राईल के मामलों और हालात बताये गये ताकि यह उम्मत और उसके अलग–अलग ज़मानों में और उसी की मुआसिर क़ौमों के हवाले से हालात के लिये मिसालें पेश करें।

हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने अपने रब की आज्ञा का पालन किया और इबादत में लीनता की ऐसी मिसालें पेश कीं कि अल्लाह तआला ने उनको नबियों का मुअल्लिम व सरदार बना दिया और फ़रमायाः

"कि मैं तुमको तमाम इन्सानों का मक़्तद और सरदार बनाता हूं", उन्होंने पूछा कि क्या मेरे आने वाले लोगों को भी?कहाः "कि ज़्यादती करने वालों को यह ज़िम्मेदारी नहीं मिलेगी, इसीलिए हज़रत इब्राहीम की औलाद में दोनों मिसालें दिखाई गयीं कि बेटे, पोते, परपोते और बाद के लोगों में भी बहुत से लोग नुबूव्वत के लिये चुने गये। उनमें परपोते हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) और उनके वालिद हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) नबी और दादा हज़रत इसहाक़ (अलैहिस्सलाम) नबी हैं। अलबत्ता हज़रत युसूफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाइयों को यह स्थान नहीं मिला जो बनी इस्राईल कहलाये। उनमें दोनों तरह की लोग हुए। इस तरह बनी इस्राईल के दोनों तरह के लोगों का ज़िक्र कुरआन मजीद में मिसाल के तौर पर आया है।

कुरआन मजीद दीनी रहनुमाई और तलक़ीन हक़ का विषय रखने के साथ ज़हनों की उच्च स्तर पर तश्कील का काम अंजाम देता है और इन्सानों में जिस शख़्सियत को नबी का स्थान दिया जाता है, उसको बचपन ही से मुश्किल हालात से गुज़ारा जाता है और उसकी जीवन में जो कठिनाइयां आती हैं उनके हल की सलाहियत भी उसको प्रदान की जाती है और उसके लिये मौक़े–मौक़े से इत्मिनान दिलाया जाता है कि कैसे ही मुश्किल परिस्थितियां सामने आयें अंजाम यदि अल्लाह ने चाहा तो अच्छा ही होगा और उसके लिये वही (ईशवाणी) के ज़रिये हिम्मत दिलायी जाती है और कुरआन–ए–करीम के बयान के प्रभावपूर्ण रूप से शक्ति दी जाती है। तथा इसके लिये कुरआने मजीद में पिछले नबियों की जीवन की घटनाओं के वह हिस्से जो दिल को ताक़त देते हैं बयान किये गये हैं। उनपर अपने को रख कर अनुमान लगा सकें और इस सिलसिले में हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) और हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के वाक़्यों को अधिक तफ़्सील से बयान किया गया है। उनके हालात से नबी करीम (स0अ0) के हालात से मुख्तलिफ़ मौक़ों की मुशाबहत मिलती है। हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के साथ उनके भाइयों ने जो रवैया अपनाया था और उनकी जान के दुश्मन हो गये थे। वही परिस्थिति रसूलुल्लाह (स0अ0) को अपने क़बीले कुरैश के लोगों से पेश आयी थी। हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को जेल में डाल दिया गया था। कई साल उसमें बेचारगी के साथ रहे। हुज़ूर (स0अ0) को उनके क़रीबियों के साथ शोएब अबी तालिब में बन्द कर दिया गया था। तीन साल इस तंगी और लाचारगी में गुज़रे। कुरैश ने आप (स0अ0) को नुबूव्वत मिलने से पहले बहुत मुहब्बत व प्रेम का प्रदर्शन किया। आप की बेटियों को आपके चचा अबूलहब के लड़कों से विवाह के बंधन में बांधा गया लेकिन नुबूव्वत मिलने के बाद दुश्मनी का रवैया अपना लिया गया। आपकी दोनों बेटियों को तलाक़ दे दी गयी और वही अबूलहब आपका बहुत बड़ा दुश्मन बन गया। इसी तरह की घटना हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के साथ घटित हुई। उनको अज़ीज़–ए–मिस्र के घर में इज़्ज़त से रखा गया। लेकिन

अज़ीज़–ए–मिस्र की औरत की गुनाह की फ़रमाइश न पूरी करने पर उनके साथ दुश्मनी का मामला किया गया। यहां तक कि जेल भेज दिया गया। हज़रत युसूफ़ (अलैहिस्सलाम) ने सब्र से काम लिया और जेल में भी अपनी नेकी और दावत व तब्लीग़ (लोगों को सत्मार्ग की ओर आने का निमन्त्रण) की ख़िदमत छोड़ी नहीं। फिर कई बरसों के सब्र के बाद उनकी ख़बर बादशाह तक पहुंची और वहां उनको इज़्ज़त के साथ कुबूल कर लिया गया और राजा का स्थान प्रदान किया गया। हुज़ूर (स0अ0) को भी कुरैश की सारी दुश्मनियों के बाद आख़िरकार मक्का बिना लड़े विजय करने का मौक़ा मिला और कुरैश के वे सब दुश्मन आज्ञापालक बनने पर मजबूर हुए और आपने उनको इस तरह माफ़ किया जिस तरह हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाइयों को माफ़ किया। घटनाओं की इस एकरूपता को कुरआन मजीद ने बड़े दिलकश अंदाज़ में बयान किया है ताकि आप (स0अ0) के लिये तक़वियत का बाइस बने और इसी के साथ अरबों के लिये जिन्होंने हुज़ूर (स0अ0) के साथ ख़ूब दुश्मनी की थी फिर अब वे आप की आज्ञा का पालन करने पर मजबूर हुए और आप (स0अ0) को शासकीय स्तर पर वहां का शासक स्वीकार कर लिया गया। कुरआन मजीद ने अपने क़िस्सा–ए–यूसुफ़ से अरबों को भी आगाह किया और बताया कि आप नबी हैं और नबी को इसी तरह पहले परेशान किया जाता है फिर परिणामस्वरूप उनको श्रेष्ठता प्राप्त होती है और सताने वाले शर्मिन्दा होते हैं।

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (स0अ0) और सहाबा को सख़्त से सख़्त हालात से गुज़ारा। फिर अल्लाह ने उनको बुलन्दी और कामयाबी अता की। यहां तक कि दुनिया की दो सबसे बड़ी ताक़ते उनके क़दमों के नीचे आ गयीं और ताएफ़ के सख़्त इम्तिहानी हालात से गुज़रने पर मेराज का इनाम मिला और फिर बद्र की जीत और हुदैबिया की अन्दरूनी जीत और फ़तेह मक्का वग़ैरह इसी ईमान व यक़ीन और सब्र व दृढ़ता का नतीजा हैं।

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने शुरू दौर ही से सख़्त हालात का सामना किया और आपके निहायत क़रीबी लोग ही आपकी जान के दुश्मन बन गये। अब नफ़रत की आग इस हद तक बढ़ गयी थी कि जो लोग आपके साथ थे उनको भी सख़्त हालात का सामना करना पड़ा और एक वक़्त वह भी आया कि दुश्मनों ने आप (स0अ0) पर और आपके घरवालों पर और आपके असहाब (सहचर) पर जीवन यापन करना इतना कठिन कर दिया कि आपको अपना प्यारा वतन छोड़ना पड़ा। लेकिन इन तमाम मरहलों में रसूलुल्लाह (स0अ0) ने सब्र व धीरज का असाधारण प्रदर्शन किया और फिर जब अल्लाह तआला ने हालात ठीक कर दिये और फ़तेह मक्का का मौक़ा आया तो आप (स0अ0) ने उन तमाम दुश्मनी रखने वालों को बग़ैर किसी दारोगीर के माफ़ कर दिया और अलग–अलग तरीक़ों से इस्लाम के दुश्मनों के लिये इस्लाम की राहें आसान कर दीं। निसंदेह आप (स0अ0) का यह वह अख़लाक़–ए–अज़ीम है जिसका गवाह ख़ुद कुरआन मजीद है, अल्लाह का इरशाद है:

"और यक़ीनन आप अख़लाक़ के बुलन्द तरीन मक़ाम पर हैं।" (सूरह अलक़लमः 4)

हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के क़िस्से में ख़ास तौर पर रसूलुल्लाह (स0अ0) और आप (स0अ0) के असहाब (सहचर) व अहले बैत (परिवार वाले) के लिये बड़ा ही तसल्ली का सामान है। दूसरी तरफ़ यह पहलू भी अहमियत रखता है कि बनी इस्राईल के बुज़ुर्गों में हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) से लेकर हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) तक और उनके बाद तक ऐसे नबी हुए जिन्होंने दावत के काम और पैरवी की आला मिसाल पेश की और उस पर उनको दूसरी क़ौमों पर वरीयता दी गयी। फिर बाद के दौर में उनमें अजब और एहसास–ए–बरतरी और गुनाहों का इरतिकाब ऐसा पेश आने लगा कि फिर उनको सज़ा दी गयी, और यह बता दिया गया कि हसब और नसब और अपने बड़ों की निस्बत को सबकुछ समझना काफ़ी नहीं है, इसका तज़किरा कुरआन मजीद की सूरह इस्रा के शुरू की आयतों में किया गया है, और दूसरे मौक़ों पर भी जैसा कि साफ़ इरशाद है: "बिलाशुब्हा अल्लाह के यहां तुममें बड़ा इज़्ज़तदार वह है जो तुममें सबसे बड़ा परहेज़गार हो।" (सूरह हुजूरातः 13)

उम्मत–ए–मुस्लिमा को इन तमाम हक़ीक़तों से ख़ास तौर से सबक़ लेने की ज़रूरत है। इस बात की संभावना है कि हुज़ूर (स0अ0) के साथ क़ुर्बानी देने वाले व्यक्ति यानि सहाबा और सहाबियात से इम्बिसात रखने वालों के अन्दर भी यह बात पैदा हो जाये। इसलिए किसी को भी इस सिलसिले में अजब और ग़ुरूर पैदा नहीं होना चाहिये। बल्कि इस शर्फ़ पर और ज़्यादा आजिज़ी और अब्दियत की शान पैदा होकर अनाबत का हाल बढ़ाना चाहिये।

यूरोप का वैचारिक व सांस्कृतिक हमला

मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

आज मुसलमानों को जिन ख़तरों का सामना हैं उनमें वह वैचारिक व सांस्कृति हमला भी है जो मौजूदा दौर में सुधार पसंद और स्वतन्त्र ख़्याल व विचारों के समर्थक मुस्लिम चिन्तक, बुद्धिजीवी और शोधकर्ता और तथाकथित बुद्धिजीवी कर रहे हैं। अतीत में यह वैचारिक व सांस्कृतिक हमला यूरोपियन चिन्तकों व ओरिएन्टलिस्ट कर रहे थे जिनके असर का दायरा मालूम तथा सीमित था। इससे मौजूदा वैचारिक व सांस्कृतिक हमले ज़्यादा गंभीर है। आज़ाद ख़्यालों के समर्थ मुस्लिम चिन्तक भोले–भाले, सीधे–साधे और सादा लौह मुसलमानों को धोखे में डालतें हैं और उनके दिलों में इस्लामी शिक्षाओं व आदेशों के संबंध से भ्रम की स्थिति पैदा कर देते हैं। उनका साहित्य अरबी, फ़ारसी, उर्दू और मुसलमानों में प्रचलित विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हो रहा है और बाहरी ताक़तें और मुस्लिम हुकूमतें उनकी सरपरस्ती कर रही हैं और इस तरह वह मुसलमानों के बीच आम किया जा रहा है। उन्हें इस्लाम विरोधी ताक़ते हर तरह का बाहरी सहयोग पहुंचा रही हैं और अब इन्टरनेट, अख़बार व मैग्ज़ीन और प्रकाशन के नये–नये साधनों ने उसको और आसान कर दिया है। दूसरी तरफ़ जो लोग ख़तरों का मुक़ाबला कर सकते हैं वे या तो क़ैद व बन्द का शिकार हैं या हक़ीक़त और सही सूरते हाल से वाकिफ़ न होने की बिना पर ख़ामोश हैं। या गोशा नशीनी को तरजीह देते हैं या वह इतिहास की समस्याओं तथा दूसरे कामों में उलझे हुए हैं जिनकी वजह से उनको नये–नये चैलेंज और ख़तरों पर और उन समस्याओं पर ध्यान देने का मौक़ा ही नहीं मिलता जिन पर मुस्लिम समुदाय के वुजूद का दारोमदार है।

यूरोपीय दुनिया में ख़ासतौर से इस्लामी मुल्कों में ईसाई मिशनरी के विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक और धर्मार्थ संस्थाएं और नेटवर्क काम कर रहे हैं। ईसाई मिशनरियों की सरगर्मियां इन मुल्कों में शबाब पर हैं जो जंगों से निढ़ाल हो चुके हैं या जातिगत कशमकश व आर्थिक परेशानियों का सामना कर रही हैं। बहुत से देश ऐसे हैं जहां पहले चर्च का वजूद नही था, अब वहां ईसाई इबादतगाहें और चर्च क़ायम हो चुके हैं। मिसाल के तौर पर ख़लीजी मुमालिक, मुत्तहिदा अरब इमारात, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान इत्यादि वे देश हैं जहां चर्च का पहले वुजूद नहीं था, लेकिन अब जगह–जगह पर नज़र आने लगे हैं, और मुसलमान मुल्कों में ईसाई आबादी का प्रतिशत बढ़ाने के लिये ज़बरदस्त कोशिशें हो रही हैं। आलमी ताक़ते मुस्लिम मुल्कों में ग़ैर मुस्लिम अक़्लियतों को बग़ावत और अलाहदगी पर उकसा रही है, जैसा कि इन्डोनेशिया और सूडान में हुआ, और बहुत से देशों में इसकी कोशिशें की जा रही हैं। ईसाई मिशनरियों की सरगर्मियां भी एक बड़ा ख़तरा हैं। इसका मुक़ाबला सिर्फ़ इस्लामी दावत की कोशिशों से किया जा सकता है। इसके लिये शऊर आम करने की ज़रूरत है और जदीद वसाएल अख़्तियार करते हुए तालीम व तरबियत और दावत व इस्लाह के काज़ को फ़आल और मुअस्सिर बनाना ज़रूरी है।

आज मुसलमान हर मौक़े पर मुजरिम गरदाना जा रहा है। उनको आतंकवादी, कट्टरवादी, अमन का दुश्मन कहा जा रहा है। दुनिया के किसी भी हिस्से में पेश आने वाले दहशतगर्दी के वाक़्ये को मुसलमानों से जोड़ दिया जाता है। मीडिया के ज़रिये ऐसी सूरतेहाल पैदा कर दी गयी है कि हर जगह मुसलमान मुशतबे समझा जा रहा है। लोग उससे ख़ौफ़ व डर महसूस करते हैं। मुसलमानों के ताल्लुक़ से यह सलबी और मनफ़ी तस्वीर मीडिया की देन है, जिसने यह प्रोपगन्डा कर रखा है कि "सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लाम ही दहशतगर्दी का सरचश्मा व मुनबअ है।" यह मौजूदा सूरतेहाल जंग

से ज़्यादा ख़तरनाक है। मौजूदा हालात का मुक़ाबला और इस्लाह के लिये संजीदा, मुसबत और ठोस क़दम उठाने की ज़रूरत है। हालिया सालों में बाज़ हल्क़ों की तरफ़ से बदगुमानी, ग़लतफ़हमी, ख़ौफ़ और दहशत और शक व शुब्हे के माहौल को ख़त्म करने के लिये बैनुल मज़ाहिब मुज़ाकरात का दौर शुरू किया गया है। इस मुहिम का मक़सद मुसलमानों के ताल्लुक़ से जो सलबी व मनफ़ी राय क़ायम की जा रही है, उसका इज़ाला बताया गया है। यह एक मुसबत कोशिश है। लेकिन आलमी ताक़ते जानिबदाराना कार्यवाहियां कर रही हैं। बल्कि मौजूदा सुपरपावर की तमामतर कार्यवाहियों का हदफ़ इस्लाम और मुसलमान हैं जबकि दुनिया के मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों में जो दहशतगर्द और इन्तिहा पसंद तन्ज़ीमें और इदारे फैले हुए हैं उनसे सुपर पॉवर न सिर्फ़ यह कि सरफ़े नज़र करता है बल्कि उनकी सरपरस्ती करता है। इसी तरह आलमी मीडिया और ज़राए नश्र व इशाअत मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत व अदावत पैदा करने वाला लिट्रेचर शाया कर रहे हैं और मुस्लिम दुश्मनी पर मुबनी किताबें और मज़ामीन शाया किये जा रहे हैं। अगर यह मुआनदाना रवैया तर्क नहीं किया गया और उसको रोकने की कोशिश नहीं की गयी तो इस सिम्त में मुसबत दिखाई देने वाला उठाया गया कोई क़दम एक सराब साबित होगा।

ज़रूरत इस बात की है कि मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और मज़ाहिब के मानने वालों के दरमियान बाहमी एतमाद और मुफ़ाहमत पैदा करने के लिये कोशिशें की जायें, इस सिलसिले में उदबा, मुफ़क्किरीन, दानिशवर और सहाफ़ी मीडिया से वाबस्ता अफ़राद अच्छा रोल अदा कर सकते हैं। इसके लिये तामीरी व मुसबत और मुन्सिफ़ाना ज़हनियत के हामिल मीडिया की ज़रूरत है। इस सिलसिले में मुसलमानों की ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ जाती है, क्योंकि वह मुजरिम कहलाये जा रहे हैं, इसीलिए मुसलमानों को चाहिये कि वे इल्म व फ़न के ज़रिये, मीडिया के ज़रिये और जामेअ मुज़ाकरात, मुसबत डायलाग और शख़्सी व इन्फ़िरादी मुलाक़ातों के ज़रिये ग़लतफ़हमियों को दूर करें और इस्लामी तालीमात की सही तस्वीर पेश करें। इसी के साथ–साथ मुख़ालिफ़ाना व मुआनदाना कार्यवाहियों पर रद्दे अमल के इज़हार से गुरेज़ करे और इश्तिआल अंगेज़ी का जवाब इश्तिआल अंगेज़ी से न दें, क्योंकि यह तरीक़ा हालात को मज़ीद अबतर बना देगा। उनको इस्लाम की सही तस्वीर पेश करने और ग़लतफ़हमियों के इज़ाले के लिये इल्मी, फ़न्नी और सक़ाफ़ती और इज्तिमाई कोशिश करनी चाहिये और मुख़ालिफ़ाना हल्क़ों तक रसाई और तफ़हीम के लिये मवाक़ेअ तलाश करने चाहिये। मौजूदा सूरतेहाल में इस बात की ज़रूरत है कि मुसलमान होश मन्दी, दानिशमंदी और सही फ़हम व फ़रासत का सुबूत देते हुए हालात का जायज़ा लें और साज़िशों और ख़तरात से बाख़बर रहें। और चैलेंजो और ख़तरों का मुक़ाबला करने के लिये हिकमते अमली पर मुबनी मुनासिब और सही हिकमते अमली अपनाएं और फ़िक्र व फ़न, ज़बान व अदब, तहज़ीब व सक़ाफ़त और तहरीफ़ी प्रोग्रामों के रास्ते से जो हमले हो रहे हैं उन ही ज़राए से उनका मुक़ाबला किया जाये, क्योंकि मुदाफ़अत की हिकमत यही है कि वह हथियार अख़्तियार किया जाये जो दुश्मन अख़्तियार करता हो, फ़रमाने इलाही है: "और उनसे मुक़ाबले के लिये जिस क़दर भी तुमसे हो सके सामान दुरुस्त रखो, क़ूव्वत से और पले हुए घोड़ों से जिनके ज़रिये तुम अपना रोब रखते हो, अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर और उनके अलावा दूसरों पर भी कि तुम उन्हें जानते हो, और जो कुछ भी तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा–पूरा दे देगा, और तुम्हारे लिये ज़रा भी कमी न होगी, और अगर वे सुलह की तरफ़ झुकें तो आप भी उसकी तरफ़ झुक जाएं, और अल्लाह पर भरोसा रखिये, बेशक वह ख़ूब सुनने वाला, ख़ूब जानने वाला है।"

ऊपर दी गयी आयत की रोशनी में ज़रूरी है कि उन ज़राए व वसाएल नीज़ इस हिकमते अमली से वाक़फ़ियत पैदा की जाये जो दुश्मन अख़्तियार करता है, मुसलमानों की नाकामी की बड़ी वजह यही है कि वह मौजूदा दौर के ख़तरात और चैलेंज के लिये ऐसे वसाएल अख़्तियार करते हैं जिनका ज़माना ख़त्म हो चुका है और जो आउट ऑफ़ डेट हो चुके हैं। जब मुसलमान नए ख़तरों और चैलेंजो की हक़ीक़त व नवीयत से वाक़िफ़ हो जायेंगे और उसके लिये सही और मुनासिब वसाएल अख़्तियार करेंगे तो कामयाब व कामरान होंगे और तमाम ख़तरों और चैलेंजों का मुक़ाबला कर सकेंगे।

है वही तेरे ज़माने का इमामे बरहक़

प्रोफ़ेसर मोहसिन उस्मानी नदवी

इक़बाल का शेर हैः

हिफ़ाज़त फूल की मुमकिन नहीं है।
अगर कांटों में हो खूए हरीरी।।

नर्म मिज़ाजी और नर्म स्वभाव अच्छी बात है, लेकिन हर जगह यह याचित नहीं है। अल्लाह तआला ने गुलाब के फूलों की हिफ़ाज़त के लिये कांटों का भी इन्तिज़ाम किया है। मोमिन की पहचान यह है कि वह यारों की महफ़िल में रेशम की तरह नर्म होता है और रज़्मे हक़ व बातिल में फ़ौलाद की मानिन्द होता है। यह सिर्फ़ इक़बाल की शायरी नहीं है, कुरआन करीम का भी हुक्म है कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हारे अन्दर सख़्ती और सलावत महसूस करें। तुम्हें नर्म चारा नहीं समझें। इस हुक्में कुरआनी को नज़र अन्दाज़ करने की वजह से और हिफाज़त खुद अख़्तियारी से बेपरवाही बरतने की वजह से यकतरफ़ा तौर पर मुसलमानों का जानी और माली नुक़सान होता है। अबूदाऊद, नसाई और तिरमिज़ी की एक मशहूर हदीस हैः "इन्सान अपने अहलो अयाल की हिफ़ाज़त करता हुआ मारा जाये वह शहीद है और जो शख़्स अपने दीन की हिफ़ाज़त करते हुए मारा जाये वह भी शहीद है और जो शख़्स अपनी नफ़्स यानि अपनी जान की हिफ़ाज़त करता हुआ मारा जाये वह भी शहीद है। शहादत का मक़ाम और उसका अज्र क्या है इसका अंदाज़ा इस हदीस से लगाना चाहिये कि क़यामत के दिन शहीद को जिस ऐज़ाज और जिन नेमतों से सरफ़राज़ किया जायेगा उनको देखकर शहीद की ख़्वाहिश होगी कि मैं फिर दुनिया में भेजा जाऊं और क़त्ल होकर शहीद किया जाऊं और फिर दोबारा मुझे दुनिया में भेजा जाये और फिर मैं शहीद किया जाऊं। इस्लाम में शहादत के मक़ाम व मर्तबे को आम करने के लिये शहादत को सिर्फ़ मैदाने जंग तक महदूद नहीं किया गया है, इसमे वुसअत अख़्तियार की गयी है, और वह यह कि जो शख़्स अपना दिफ़ाअ करता हुआ या अपने दीन का, या अपने माल व असबाब का दिफ़ाअ करते हुए क़त्ल किया जाये वह भी शहीद है, उसे शहादत का मक़ाम व अज्र दिया जायेगा। हदीस में जो कलीदी लफ़्ज़ है वह "दून" है, यानि क़त्ल किया जाये अपनी हिफ़ाज़त और अपना दिफ़ाअ करते हुए। यानि क़त्ल किये जाने से पहले अपने दिफ़ाअ की मुमकिना कोशिश कर लेनी चाहिये। इस हदीस में अपने नफ़्स का अपने माल का अपने दीन का दिफ़ाअ करने और अपने तहफ़्फ़ुज़ की कोशिश करने का हुक्म है। दिफ़ाअ का हुक्म एक और हदीस से ज़्यादा वाज़ेह होता हैः एक शख़्स रसूलुल्लाह स0अ0 के पास आया और उसने कहा कि एक शख़्स मेरा माल छीनने के इरादे से मेरे पास आया। आपने जवाब में कहा कि उसको अपना माल मत दो, पूछने वाले ने पूछा अगर वह माल लेने के लिये बरसरे जंग हो जाये तो आपने फ़रमाया कि उससे लड़ो। फिर सवाल करने वाले ने सवाल किया कि अगर वह मुझे क़त्ल कर दे तो? आप स0अ0 ने फ़रमाया कि तो शहीद हो गये। अब सवाल करने वाले ने सवाल किया कि अगर मैंने उसकी जान ले ली तो क्या होगा?आप स0अ0 ने जवाब दिया वह जहन्नम में जायेगा। कुरआन में भी मुक़ाबले के लिये तैयारी का हुक्म मौजूद है। सूरह निसा में है, "ऐ ईमान वालों मुक़ाबले के लिये सामान तैयार रखो।" यह हुक्म आम है। मैदाने जंग की तैयारी के लिये भी है और आम बलवाइयों और शर पसंदो से मुक़ाबले के लिये भी।

कुरआन करीम की आयत और दोनों हदीसों से साफ़ है कि अपना दिफ़ाअ करना चाहिये और अपने

माल को और अपनी जानों को बिना दिफ़ाअ की कोशिश के ज़ालिमों के हवाले नहीं कर देना चाहिये। हमारे मुल्क में भीड़ के ज़रिये तश्द्दुद और ख़ूंरेज़ी के वाक़्यात आम होते जा रहे हैं। अभी हाल ही में अफ़राज़ुल इस्लाम को क़त्ल किया गया। दादरी में पहले मुहम्मद अख़लाक़ को इसी तरह गोहत्या के आरोप में भीड़ ने हत्या कर दी और फिर उसके बाद हाफ़िज़ मुहम्मद जुनैद और पहलू ख़ान को क़त्ल किया गया। ज़ाकिर ख़ान को राजस्थान में पीट–पीट कर मार डालने की कोशिश की गयी। एक ख़ास मंसूबे के तहत कभी गऊ रक्षा के नाम पर कभी लवजिहाद के नाम पर मुसलमानों के ख़िलाफ़ दहशतगर्दी का सिलसिला रुकने का नाम नहीं लेता है। कभी–कभी बिरादराने वतन में हेमंत कुमार करकरे जैसा बहादुर अफ़सर उठता है या गौरी लंकेश जैसी बाज़मीर सहाफ़िया हक़गोई से काम लेती है तो पुरअसरार तरीक़े से उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता है। इन हालात में मुसलमानों को क्या करना चाहिये। मज़कूरा बाला हदीस से हमें यह सबक़ मिलता है कि मुसलमानों को अपना जायज़ दिफ़ाअ करना चाहिये। घरों के अन्दर भी अपने दिफ़ाअ के जायज़ क़ानूनी हथियार रखने चाहिये। अपनी तरफ़ से किसी पर ज़ुल्म व ज़्यादती हरगिज़ नहीं होनी चाहिये, सफ़र में सबसे ख़ुश अख़लाक़ी से पेश आना चाहिये, सबके साथ हमदर्दी और तआउन का रवैया अख़्तियार करना चाहिये, लेकिन इसके बावजूद कुछ लोग अगर ज़ुल्म और जारहियत पर आमादा हो जाएं और हमलावर हों और जान लेने के दरपे हों तो उनका मुक़ाबला करना चाहिये, क्योंकि मुक़ाबला करने और अपने दिफ़ाअ का हुक्म रसूलुल्लाह स0अ0 ने दिया है। जान अगर चली भी जाये तो अपना दिफ़ाअ करते हुए जान जानी चाहिये। ऐसे मौक़े पर:

1. कलिमा तैय्यबा का विर्द ज़बान पर होना चाहिये।

2. अल्लाह तआला से शहादत के मर्तबे पर फ़ाइज़ होने की दुआ मांगनी चाहिये और कुरआनी दुआ पढ़नी चाहिये: रब्बना अफ़रिग़ अलैयना सबरऔं व सब्बित अक़्दामना वन सुरना अलल क़ौमिल काफ़िरीन।

3. मौत की परवाह किये बिना दुश्मनों से हिम्मत से लड़ना चाहिये, क्योंकि हाथ जोड़कर रहम की इल्तिजा का और ज़िन्दगी की भीख मांगने का भी वही अंजाम होगा जो एक मुसलह भीड़ से लड़ने का होगा, इसलिए बेहतर यही है कि लड़कर और एक–दो को ज़ख़्मी करके जान दी जाये।

क्योंकि हदीस में अपनी मुदाफ़अत करने का हुक्म है। इससे शहादत का बुलन्द मर्तबा मिलता है। यह भी मुमकिन है कि अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों और इस्लाम के दुश्मनों के दिल में तुम्हारा ख़ौफ़ डाल दे। वरज़िश और वरज़िशी खेलों के लिये कुछ वक़्त ज़रूर देना चाहिये, इसलिए कि हदीस में है कि ताक़तवर मोमिन ज़ईफ़ मोमिन से अच्छा है। शहादत की मौत डरने की चीज़ नहीं है। जान आरज़ू और रूह तमन्ना बनाने की चीज़ है, यह हौसला और हिम्मत का पैग़ाम है। सुल्तान टीपू का क़ौल याद रखना चाहिये कि शेर की एक दिन की ज़िन्दगी गीदड़ की सौ साल की ज़िन्दगी से बेहतर है। दुश्मनों को यह एहसास होना चाहिये कि मुसलमान गीदड़ की तरह डरपोक नहीं होता है। हमारे असलाफ़ इस्लाम की राह में हर तकलीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बर्दाश्त करते थे और शौके शहादत इस क़दर था कि खजूर खाने की देरी भी उनसे बर्दाश्त नहीं होती थी। मौत का ख़ौफ़ और दुनिया की मुहब्बत हदीस के शब्दों में वह "वहन" है, जिससे क़ौमें कमज़ोर और ज़वाल आमादा होती हैं और दुश्मन ग़ालिब आ जाते हैं। यह वह मर्ज़ है जो हलाकतखेज़ है, इस्लाम की तालीम बहादुरी की तालीम है। मुसलमानों के सही क़ायद और इमामे बरहक़ के लिये ज़रूरी है कि वह मुसलमानों में शहादत का जज़्बा पैदा करेऔर लक़ाए इलाही की आतिश शौक़ को शोला ज्वाला बनाए।

है वही तेरे ज़माने का इमामे बरहक़।
जो तुझे हाज़िर व मौजूद से बेज़ार करे।।
मौत के आइने में तुझे दिखाकर रुख़े दोस्त।
ज़िन्दगी तेरे लिये और भी दुश्वार करे।।

अक़्लमंदी का तक़ाज़ा

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

मौजूदा दौर बहुत अजीब व ग़रीब दौर है। इस दौर में अक़्ल का ख़ूब चर्चा है, मगर बेअक़्ली की बातें ज़्यादा हैं। इस ज़माने में लोगों का कहना यह है कि हर शख़्स अक़्लमंद है। यहां तक कि इस दौर के बच्चे भी ऐसी बातें करते हैं और ऐसे सवालात करते हैं जिनसे ख़ुद बड़े परेशान हैं कि एक छोटा बच्चा यह बातें कैसे पूछ रहा है? लेकिन वाक़्या यह है कि इस दौर के बड़े इतनी बेअक़्ली करते हैं, मालूम होता है कि जो अक़्ल बचपन में मिली थी वह भी खो चुके हैं। इस नाहिये से देखा जाये तो यह दौर वाक़्ई बहुत अजीब व ग़रीब दौर है। एक तरफ़ ज़ाहिर में पढ़े–लिखे लोगों की तादाद बहुत ज़्यादा है, लेकिन पढ़े–लिखे होकर जिहालत में मुब्तिला तादाद भी इतनी ही है जिसको यह कहा जा सकता है कि अक़्लमंदी में हिमाक़त है और पढ़े–लिखे होकर जाहिल हैं और यह काम बड़ा नाज़ुक है कि अक़्ल मंद और पढे लिखे शख़्स की जिहालत को दूर किया जाये। तारीख़ में ऐसे बहुत से बादशाह गुज़रे हैं जिनके मुताल्लिक़ तारीख़ नवीसों ने लिखा है कि वे अक़्ल मंदी की बातें करते थे लेकिन कभी कभी ऐसे काम करते थे जिनसे उनका पागल होना ज़ाहिर होता था। इसी तरह इस ज़माने में भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपनी ज़ाति ज़िन्दगी की बात करते हुए अक़्लमंद नज़र आते हैं। लेकिन जब वही लोग इन्सानी सतह पर समाज में बात करते हैं तो बिल्कुल बेअक़्ल मालूम होते हैं।

अक़्ल की सही इस्तेमाल बहुत ज़रूरी है। उसका हक़ यह है कि उसको बन्द करके न रखा जाये और ग़लत इस्तेमाल न किया जाये वरना आजकल ऐसा माहौल बनाया जा रहा है कि आप अक़्ल का सही इस्तेमाल न कर सकें, गोया इस वक़्त पूरी दुनिया में यह ब्रेन वाशिंग हो रही है कि अक़्ल को ऐसा बना दो कि सोचने की सलाहियत ही न रह जाये, इसलिए हममें से हर एक को बहुत होशियार रहना चाहिये। और हर जगह अपनी अक़्ल को सही तौर पर इस्तेमाल करना चाहिये क्योंकि अगर कोई चीज़ इस्तेमाल नहीं की जाती तो उसका नफ़ा ख़त्म हो जाता है,लेकिन अक़्ल के इस्तेमाल में यह ख़्याल मलहूज़ रखना ज़रूरी है कि वह इस्तेमाल बरमहल हो वरना बसा औक़ात ग़ैरमहल पर अक़्ल इस्तेमाल करने का नतीजा भी बड़ संगीन होता है।

मौजूदा दौर में बेअक़्ल बातों की मिसाल ऐसी कि जैसे कहा जाए कि कौवा कान ले गया और तमाम लोग उस कौवे के पीछ पड़ जाएं, और अपने कान पर हाथ फेर कर न देखें ताकि पता चल सके कि कान है या वाक़ई कौवा ले गया। ठीक यही सूरते हाल आज हमारे समाज की हो गयी है। नौबत यहां तक पहुंच गयी है कि अगर अख़बार में कोई बेबुनियाद ख़बर अच्छे क़ालिब में छप जाये तो तमाम लोग उस पर एतमाद कर लेते हैं और हक़ीक़त से बाख़बर होने की फ़िक्र नहीं करते हैं, जबकि अल्लाह तआला ने उन्हें मौक़ों के लिये अक़्ल की नेमत अता की है ताकि आदमी अपनी अक़्ल इस्तेमाल करके सूरते हाल का सही अंदाज़ा लगा सके।

इस हक़ीक़त से किसी को इनकार नहीं कि इन्सानी समाज में तालीम का जज़्बा होना बहुत ज़रूरी चीज़ है। वाक़्या यह है कि तालीम एक नूर है जिससे समाज में रोशनी फैलती है, अगर कोई शख़्स इस हक़ीक़त का इनकार करता है तो ज़ाहिर है कि वह बेअक़्ली का सुबूत देता है, लेकिन इस तालीम के लिये यह शर्त है कि उसके ऊपर ग़िलाफ़ न चढ़ाया जाये, यानि उसकी रोशनी को बन्द करके आम न किया जाये, बल्कि उसकी रोशनी को खुला रखा जाये, मौजूदा दौर में तालीम का दौर दौरा होने के बावजूद भी तालीमयाफ़्ता तबक़े की तरफ़ से बेअक़्ली की बातें सामने आने की एक वजह यह भी है कि उनकी तालीम पर एक ग़िलाफ़ चढ़ा है, जिसकी वजह से तालीम की रोशनी समाज में नज़र नहीं आ रही है और लोग तारीकी की तरफ़ बढ़ते जा रहे हैं और कभी–कभी इस सिलसिले में ऐसे नमूने सामने आते हैं जिनको देखकर एक जाहिल भी पनाह मांगे। बतौर मिसाल डॉक्टरी शोबा को ले लिया जाये जो कि इन्सानियत की ख़िदमत का बहुत अच्छा तरीक़ा है, लेकिन आज इस शोबे की उमूमी सूरते हाल ऐसी हो गयी है जिसका इन्सानियत से कोई ताल्लुक़ नहीं है। कितने ऐसे संगदिल डॉक्टर हैं जो परेशान हाल मरीज़ों के गुर्दे ठीक करने के बजाय निकाल

ही लेते हैं। इससे यह बात पता चलती है कि अगरचे इस ज़माने में लोग पढ़ लिख गये हैं, और यह ज़माना तरक़्क़ी का है लेकिन यह पढ़ाई–लिखाई और तरक़्क़ी अस्ल में जाहिलियत के ग़िलाफ़ में है और ज़ाहिर है कि जब पढ़ा लिखा आदमी बिगड़ने पर आता है तो वह शैतान के भी कान काटता है।

इसीलिए तलीम के मैदान में इन्सानियत की ख़िदमत पेशनज़र रखना चाहिये और यह समझना चाहिये कि हमारी पढ़ाई–लिखाई का मक़सद सिर्फ़ हुसूले ज़र नहीं है, अगर सिर्फ़ दौलत कमाना ही मक़सद होता तो बिना पढे–लिखे भी इस मक़सद में कामयाबी मुमकिन थी। लेकिन हमारी तालीम का मक़सद दरअस्ल

इन्सानियत की बेलौस ख़िदमत है और दूसरों की राहत व सुकून है। वाक़्या यह है कि अगर हमारी ज़हनियत ऐसी बन जाये तो तड़पती इन्सानियत को सुकून नसीब हो जाये। आज हर शख़्स परेशान है और हर शख़्स को यह शिकवा है कि डॉक्टरों की निगाह लोगों की जेब पर होती है, उनको ख़िदमते ख़ल्क़ से कोई मतलब नहीं होता। उनका मक़सूद इलाज करना नहीं बल्कि दौलत बटोरना है और इसी तरह जो लोग सरकारी आफ़िसों में बैठे हुए हैं, वहां पर लोगों को यह शिकायत है कि यहां के अफ़सरान असलन लोगों का काम करने के लिये नहीं बैठे हैं, बल्कि लागों की भारी–भारी रक़में हड़पने के लिये बैठे हैं, और उन अफ़सरान की नज़र लोगों की परेशानियों पर नहीं होती है बल्कि उनकी निगाह उनकी जेब पर टिकी रहती है।

अगर दुनिया का उमूमी जायज़ा लिया जाये तो मालूम होगा कि वाक़ई आज पढ़ना–लिखना बहुत हो गया है। और इस वक़्त इतने कालिज हैं कि शायद दुनिया की तारीख़ में हज़रत आदम अलै0 से लेकर इस वक़्त तक इतने कालिज न हुए हों, लेकिन इसके बावजूद इस ज़माने में इन्सानियत के ख़िलाफ़ इतना काम हो रहा है और उतनी ही जिहालत फैल गयी है। जो शायद हज़रत आदम अलै0 से लेकर इस वक़्त तक इतनी न फैली हो, बस फ़र्क़ इतना है कि आज जिहालत पढ़ी–लिखी है, पहले जिहालत ख़ासिल जिहालत थी, लेकिन अब अपटूडेट जिहालत है। ज़ाहिर में उम्दा लिबास है, पढ़ा–लिखा आदमी है, लेकिन अन्दर से डाकू है। या यूं कहे कि अन्दर से चीता या सांप है।

तालीमी मैदान में एक बात यह भी पेशनज़र रखना ज़रूरी है कि हम लोग जो तालीम नई नस्ल को दे रहे हैं उसकी तासीर क्या है?इस दौर का एक यह भी अलमिया है कि आज कालिजों में जो तालीम दी जा रही है और जो बातें सिखाई जा रही हैं वह तालीम नहीं बल्कि हक़ीक़त में एक ज़हर है, जिससे पूरी इन्सानियत ज़हरआलूद होती जा रही है।

अक़्ल मन्दी का एक दूसरा तक़ाज़ा यह है कि हम अपने मुआशरे की इस्लाह की फ़िक्र करें, और समाज में ऐसी बेशुमार ख़्वातीन हैं जिनको जलाया जा रहा है, इसी तरह न जाने कितने ऐसे बूढ़े मां–बाप हैं, जिनको उन्हीं के घरों से धक्के देकर निकाला जा रहा है, अगर ग़ौर किया जाये तो इस गंदे माहौल की भी बुनियादी वजह यही है कि तालीम के फल कड़वे निकल रहे हैं, और अक़्ल को उसके ग़ैर महल पर इस्तेमाल किया जा रहा है और सबसे बढ़कर यह कि मग़रिबी तहज़ीब हद दरजा महबूब हो गयी है, आज हाल यह हो गया है कि लोग मग़रिबी तहज़ीब पर ऐसा न्यौछावर हैं कि अपने मुल्क की तहज़ीब को फ़रामोश करने पर राज़ी हैं। जबकि खुद मग़रिबी अक़वाम का हाल यह है कि वह ख़ुद अपनी तहज़ीब से परेशान है।

इस वक़्त पूरी दुनिया हक़ीक़ी अमन व सुकून की तलाश में है, हर किसी की ख़्वाहिश है कि वह ख़ुशी की ज़िन्दगी बसर करे। लेकिन अफ़सोस की बात है कि आज इन्सान के दिल की ख़ुशी ख़त्म हो गयी है। और यह तय है कि जब तक दिल ख़ुश नहीं होगा उस वक़्त तक किसी भी चीज़ में मज़ा हासिल नहीं हो सकता, इसीलिए कितने ऐसे लोग हैं, जिनके पास पैसे की बेइन्तहा दौलत है, मगर उनको हक़ीक़ी सुकून मयस्सर नहीं है, जबकि वे यह चाहते हैं कि उनको किसी भी तरह सुकून नसीब हो जाये। लिहाज़ा ऐसे हालात में दानिशवर तबक़े की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि तालीमी मैदान में इस्लाह की कोशिश करे, इन्सानियत की ख़िदमत के जज़्बे को फ़रोग़ दें, और दुनिया को हक़ीक़ी अमन व सुकून से आशना कराएं, जब लोगों को यह हक़ीक़ी सुकून नसीब होगा तो मुआशिरे से वह तमाम फ़ितने वाली चीज़ें अपनेआप दूर हो जाएंगी, जिनसे आज हर इन्सान कुढ़न महसूस कर रहा है।

क्रमवार:

एकेश्वरवाद क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ग़ैरत–ए–इलाही:

अल्लाह तबारक व तआल की ग़ैरत का मामला बहुत ही हस्सास है। इसकी एक छोटी सी मिसाल यूं समझ लें कि अगर किसी आदमी की शादी हो गयी, और उसके बाद उसका जी चाहा कि एक और शादी कर ले, तो जो पहले वाली बीवी है, वह इसको भी पसंद नहीं करती कि कोई दूसरा शरीक भी उसके साथ आये, क्योंकि उसको भी शिरकत पसंद नहीं। इसी तरह आप ख़ुद अपने बारे में ग़ौर कीजिए। आप यहां बैठे हुए हैं, कोई आपके पास आये और कहे कि मैं सिर्फ़ आपसे मिलने आया हूं तो आपको ख़ुशी होगी, लेकिन जब आपको पता चले कि वह आपसे मिलने नहीं आया था, बल्कि शहर किसी काम से आया था, उसको कुछ ख़रीदना था, सोचा कि आपसे भी मिल लें, तो आपकी ख़ुशी कम हो जायेगी। इसलिए कि आप इस बात को समझ लेंगे कि वह तन्हा हमसे मिलने नहीं आया, बल्कि अपने काम के लिये आया था फिर हमसे भी मिल लिया, इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि जब हम तमाम लोगों के अन्दर अल्लाह ने एक ग़ैरत रखी है, तो अब ग़ौर करने वाली बात है कि उस ग़ैरत का पैदा करने वाला कौन है?उस ग़ैरत की अस्ल कहां हैं?जब हमारी ग़ैरत का यह हाल है तो अल्लाह की ग़ैरत का आलम क्या होगा?इसीलिए हदीस में आता है:

"तमाम शुरका में शिरकत से सबसे ज़्यादा ग़ैरत मुझे है।" (मुस्लिमः 7666)

"कोई भी अगर ऐसा काम करता है कि उसमें वह किसी दूसरे को मेरे साथ शरीक कर देता है तो मैं उसको छोड़ देता हूं और उसके शिर्क को भी।" (शोएबुल ईमान लिल बैहिक़ीः 6836)

मज़कूरा हदीसे कुदसी से यह बात वाज़ेह हो गयी है कि जितने भी शुरका हैं उनसे ज़्यादा ख़ुदा को ग़ैरत है। वह सबसे ज़्यादा मुस्तग़नी है। ख़ुदा फ़रमाता है कि मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं कि मुझे किसी के साथ शरीक किया जाये, तो एक शिर्क वह है जिसको शिर्के जली कहते हैं। वह तो ऐसी ख़तरनाक चीज़ है जिसके बाद नजात का तसव्वुर नहीं, जब तक कि तौबा न हो। और एक शिर्के ख़फ़ी है, कि आदमी काम करे लेकिन अल्लाह की रज़ा के लिये न करे बल्कि दूसरे की नियत कर ले तो अल्लाह को यह चीज़ भी पासंद नहीं है। इसीलिए ऊपर हदीस में हज़रत मआज़ रज़ि0 से आप स0अ0 ने फ़रमाया कि अल्लाह के साथ ज़रा भी शिर्क न हो। असलन तो यहां पर शिर्के जली ही मुराद है लेकिन ग़ौर किया जाये तो शिर्के ख़फ़ी भी एक तरह से मुराद लिया जा सकता है।

बन्दों का हक़:

हदीस के दूसरे जुज़ से मालूम होता है कि अगर इन्सान बन्दगी में मुकम्मल है, उसकी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह तबारक व तआला और उसके रसूल स0अ0 के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ गुज़र रही है। अल्लाह की रज़ा के लिये सारे काम हो रहे हैं तो अब अल्लाह तबारक व तआला पर यह हक़ हो गया कि अल्लाह तबारक व तआला उस बन्दे को अज़ाब न दे। अब वह बन्दा जहन्नुम में जा ही नहीं सकता। हदीस में साफ़–साफ़ कहा गया कि यह बन्दे का हक़ है कि बन्दा उस तरीक़े को अख़्तियार कर ले। जब वह अख़्तियार कर लेगा तो उसके आगे आप स0अ0 ने हज़रत मआज़ रज़ि0 से यह बात फ़रमायी किः क्या जानते हो कि अल्लाह पर बन्दों का क्या हक़ बन गया? हज़रत मआज़ रज़ि0 ने फ़रमाया, अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। आप स0अ0 ने फ़रमाया अब अल्लाह पर हक़

यह है कि बन्दों को अज़ाब न दे। जो बन्दा उस तरीक़े को अख़्तियार कर लेगा कि अक़ीदा–ए–तौहीद भी उसमें रासिख़ हैं, अक़ाएद उसके पूरे मज़बूत हैं। आमाल उसके दुरुस्त हैं। फ़राएज़ व वाजिबात का पाबन्द है। हुकूक का अदा करने वाला है। पूरी तरह बन्दगी अख़्तायार करने वाला है तो यह बात तय है कि उसको मेहनत का सिला मिलेगा।

लेकिन पहली चीज़ यह है कि इन्सान हक़ीक़ी बन्दगी करने वाला हो। हदीस में साफ़ आता है कि इन्सान एक अल्लाह की बन्दगी करने वाला हो। उस बन्दगी में सारी चीज़ें आ गयीं और फिर यह भी आ गया कि शिर्क न हो। और उसमें शिर्क की सारी शक्लें आ गयीं तो जो इस तरह ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो ज़ाहिर है कि तो अब भी वह जन्नत का मुस्तहिक़ नहीं होगा?अल्लाह तबारक व तआला क्या ऐसे शख़्स को जहन्नुम में भेजेगा? वह तो साफ़ सुथरा होकर अल्लाह के यहां पहुंच रहा है तो ज़ाहिर है कि अल्लाह पर यह हक़ है कि उसको अज़ाब न दे। गोया एक हक़ बन्दे पर है और एक हक़ अल्लाह पर है।

कुरआन मजीद और हदीसों में बहुत सी जगहों पर इस तरह की ताबीरात इस्तेमाल हुई है कि जो शब्द बन्दे के साथ इस्तेमाल हुआ फिर तमासिल के तौर पर वही शब्द अल्लाह तआला के लिये भी इस्तेमाल हुआ। एक जगह इरशाद है "और उन (काफ़िरों) ने चाल चली और अल्लाह ने भी खुफ़िया तदबीर की और अल्लाह ही सबसे बेहतर तदबीर करने वाला।" (आले इमरानः 54)

ज़ाहिर है कि बन्दे के मर्क की नवीयत ज़रा मुख़्तलिफ़ हैं और अल्लाह के लिये जो मर्क का शब्द इस्तेमाल हुआ उससे इसकी नवीयत अलग है। इसी तरह मज़कूरा हदीस में भी जो हक़ बयान हुआ है, बन्दे पर जो हक़ है वह हक़ लाज़िम है, इसलिए कि बन्दा मजबूर है कि उसी अंदाज़ से इबादत करे और उस हक़ को समझे और जो अल्लाह पर हक़ है तो ज़ाहिर है कि अल्लाह मजबूर नहीं, वह मुख़्तार है। वह जो चाहे करे लेकिन जिस तरह बन्दे ने वफ़ादारी का सुबूत दिया है तो चूंकि अल्लाह तबारक व तआला सबसे बढ़कर हक़ शनास है, ख़ुद अपने आप को अल्लाह तआला ने क़द्रदान कहा है। इरशाद हैः "यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़ा क़द्रदान है।" (सूरह शूराः 23)

शुक्र करने वाले का मतलब क़द्रदान है यानि जो नेकी की जा रही है उसको सबसे ज़्यादा क़द्र की निगाह से देखने वाला है तो यहां पर जो कहा गया कि अल्लाह पर यह हक़ है, इसका मतलब यही है कि अल्लाह तआला ऐसे बन्दे की पूरी क़द्र फ़रमाता है और उसके आमाल और उसकी नेकियों को अल्लाह तबारक व तआला क़ुबूल फ़रमाता है और फिर उसको नवाज़ता है। अपने ऐसे बन्दे को नवाज़ता है जो बन्दगी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार कर गया हो। अल्लाह तबारक व तआला ऐसे शख़्स को जहन्नुम में नहीं भेजते वरना ज़ाहिर है बन्दगी में जितनी कमी होगी उसके एतबार से उसको भुगतना पड़ेगा। नमाज़ों की पाबन्दी नहीं है, फ़राएज़ की पाबन्दगी नहीं है और ईमान वाला बन्दा है, तौहीद को मानता है, रिसालत व आख़िरत को मानता है, अक़ाएद ठीक है, अलबत्ता आमाल में कोताही है तो ज़ाहिर है कि फिर अल्लाह पर यह हक़ नहीं है कि वह उसको अज़ाब न दे। हो सकता है कि वह अज़ाब का शिकार हो और कुछ अर्सा उसको जहन्नुम में जाना पड़े उसके बाद वह जन्नत में भेज दिया जाये। लेकिन जो मुकम्मल बन्दगी अख़्तियार करने वाला है, इस तौर पर कि उसने ज़रा भी शिर्क नहीं किया तो अल्लाह तबारक व तआला उस शख़्स को ज़रा भी अज़ाब नहीं देता। उसको सबसे पहले अल्लाह तबारक व तआला जन्नत में दाख़िल करता है।

शेषः दर्स–ए–इबरत

.....और हर साहिबे ईमान जिसका दावत व तब्लीग़ से रिश्ता है, उसका काम भी पैग़ाम पहुंचाना है, लिहाज़ा इस सिलसिले में बहुत जल्द ग़ैर मामूली फ़तेह की तवक़्क़ो रखना अक़्ल मन्दी नहीं।

इसी तरह वे लोग जो दीन से किसी दर्जे में ताल्लुक़ पैदा होने के बाद अपनी हर बात और अपने हर काम को बड़ा कारनामा समझते हैं उनके लिये भी इस वाक़्ये में दर्से इबरत है कि एक नबी की ज़रा सी ग़लती पर अल्लाह तआला ने पकड़ फ़रमा ली तो हमारी क्या हैसियत है।

दर्स-ए-इबरत

मौलाना फ़रूरुल हसन नदवी

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ क़ौमों और नबियों के वाक़्यात बयान किये हैं और आपने उनकी तफ़सीर बयान फ़रमायी है। उन वाक़्यात और तज़किरों में उम्मते मुस्लिमा के लिये बेशुमार पैग़ामात हैं और उनमें हर ईमान वाले की इस्लाह का अच्छा नमूना भी मौजूद है। एक दायी के लिये दावत का नमूना है, और एक ताजिर व मुअल्लिम व मुस्लह के लिये उसके एतबार से बेहतरीन उस्वा है।

अल्लाह के नबी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का क़िस्सा भी ग़ैरमामूली अहमियत रखता है। जिसको कुरआन मजीद ने इन्तिहाई मुअस्सिर उसलूब में पेश किया है। अस्ल में हज़रत यूनुस अलै0 को अल्लाह तआला ने इराक़ के क़रीब एक ऐसी बस्ती नैनवी की तरफ़ नबी बनाकर भेजा था, आपने अपनी क़ौम में दावत व इस्लाह का फ़रीज़ा अंजाम दिया और अर्से तक उनकी इस्लाह की मुख़्तलिफ़ कोशिशों में हमातन मसरूफ़ रहे। मगर उनकी क़ौम ने उनकी एक बात न मानी और हठधर्मी पर उतर आयी। आख़िरकार नौबत यहां तक आ पहुंची कि अब राहे रास्त पर न आने की सूरत में इस क़ौम पर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होगा। इसीलिए हज़रत यूनुस अलै0 अपनी क़ौम से नाराज़ होकर बस्ती छोड़ गये और अज़ाबे इलाही के नुज़ूल की बशारत भी दे गये। मगर अभी ख़ुद उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से बस्ती छोड़ने की इजाज़त न आयी थी। फिर भी वे अपने इज्तिहाद की बुनियाद पर चले गये।

अल्लाह तआला की इजाज़त के बिना नबी का बस्ती से चला जाना मामूली न था, लिहाज़ा हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम जब बस्ती छोड़कर रवाना हुए और किसी दूसरी बस्ती में जाने के लिये नाव पर सवार हुए तो रास्ते में नाव डांवाडोल होने लगी और समन्दर में सख़्त तूफ़ान आ गयी। उस वक़्त के लोगों में एक यह ख़्याल आम था कि अगर कोई शख़्स अपने आक़ा की नाफ़रमानी करके भागता है और नाव पर सवार होता है तो कश्ती हिचकोले खाती है। ऐसे शख़्स को बीच समन्द ही में उतार देना चाहिये। इसलिए लोगों ने अपने इसी अक़ीदे के मुताबिक़ कुरा अंदाज़ी की और उसमें हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के नाम का रुक़्क़ा निकला और यह तय हुआ कि अब उन्हें समन्दर में उतार दिया जाये। उन्हें वहीं उतार दिया गया और वे डूब गये, लेकिन चूंकि आप अल्लाह के नबी थे, और नबी को सख़्त मराहिल ही से गुज़रना पड़ता है, इसलिए अल्लाह तआला ने आपको सख़्त मराहिल से गुज़ारा, मगर हलाकत से महफ़ूज़ रखा। और ग़ैब से यह नज़्म हुआ कि आपको समन्दर में उतरते ही एक बड़ी मछली ने हिफ़ाज़त के साथ निगल लिया और आप उसके पेट में कई दिन रहे। वहां आप तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहे, और अपनी ग़लती पर नदामत का हद दर्जे एहसास हुआ, फिर कुछ दिनों के बाद आप मछली के पेट से बाहर आ गये और अल्लाह तआला ने आपके जिस्म को अच्छा कर दिया।

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की ग़ैर मौजूदगी में उनकी क़ौम पर जब अज़ाब के आसार ज़ाहिर हुए तो उन्हें अंदाज़ा हुआ कि अब हमारी गिरफ़्त होने वाली है, लिहाज़ा आफ़ियत इसी में है कि तौबा कर ली जाये, चुनान्चे सभी लोगों ने आसारे अज़ाब नज़र आते ही ख़ुदा से माफ़ी मांगी और ताएब हो गये, अल्लाह तआला क़ादिरे मुतलक़ और इन्तिहाई मग़फ़िरत करने वाला और रहमान व रहीम है, उसने तमाम क़ौम को माफ़ कर दिया और अज़ाब टल गया, यहां यह पहलू ध्यान देने योग्य है कि क़ौम पर अज़ाब आने के बाद नहीं टला बल्कि आसारे अज़ाब नज़र आने पर उनकी तौबा के सबब अज़ाब नाज़िल नहीं हुआ।

कुरआन मजीद में इस वाक़्ये का मुताला करके यह बात समझ आती है कि जो लोग दावत के काम से वाबस्ता हैं, या मुआशिरे की इस्लाह में उनका किसी भी हद तक हिस्सा है, वह अपने काम की ख़ातिर ख़्वाह नताएज रौनुमा न होने पर दिल छोटा करके न बैठें, बल्कि अपना काम करते जायें। नतीजे अल्लाह के हाथ में हैं, और न ही इस सिलसिले में अपनी ज़बान से मायूसी के अल्फ़ाज़ निकालें, अक्सर ऐसा होता है कि अगर अस्हाबे दावत को मुश्किलात और परेशानियों का सामना पड़ता है तो बद्दिल हो जाते हैं और मेहनत छोड़ देते हैं। हालांकि यह मुनासिब अमन नहीं, अल्लाह तआला ने अम्बिया को सिर्फ़ पैग़ाम पहुंचाने का मुकल्लफ़ बनाया था।

.....शेष पेज 12 पर

जनाज़े के एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हर इन्सान को एक न एक दिन फ़ना का शिकार होना है। जब इन्सान पर मौत तारी होने लगे तो उस वक़्त क्या करना चाहिये? उसकी आख़िरी रस्में किस तरह अदा करनी चाहिये?इस्लाम में इसको साफ़ तौर से बयान किया गया है, इसके बारे में कुछ एहकाम ज़ेल में बयान किये जा रहे हैं:

जब मौत के आसार ज़ाहिर होने लगें:

जब किसी शख़्स का आख़िरी वक़्त क़रीब हो जाये, और मौत की अलामतें उस पर ज़ाहिर होने लगें, जैसे: उसके पैर ढ़ीले पड़ जायें, खड़े न रह सकें, नाक टेढ़ी हो जाये और कनपटी धंस जाये तो नीचे लिखे गये काम उसके रिश्तेदारों को करने चाहियें:

दाहिनी करवट पर लिटा दिया जाये: अगर मुमकिन हो तो मैय्यत को लिटाने का सबसे बेहतर तरीक़ा यह है कि उसको दाहिनी करवट पर क़िब्ले की तरफ़ लिटा दे, जिस तरह मैय्यत को क़ब्र में लिटाया जाता है। (हिन्दिया)

इसलिए कि बैहिकी, मुस्तदरक हाकिम वग़ैरह में हज़रत अबूक़तादा रज़ि0 की रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो आपने हज़रत बराअ इब्ने मअजूर के बारे में दरयाफ़्त किया, लोगों ने कहा कि उनकी वफ़ात हो गयी, उन्होंने आपके लिये तिहाई माल की वसीयत नीज़ (इस बात की भी वसीयत की) की जांकनी की हालत में उनको क़िब्ला रो कर दिया जाये, तो नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: उन्हें फ़ितरत (सुन्नत) की तौफ़ीक़ मिली और उनका तिहाई माल उनके बेटे पर लौटाता हूं। (अलहदीस)

अगर इस अंदाज़ में लिटाना मुमकिन न हो तो मरीज़ को चित उसको चित लिटा दिया जाए। पैर क़िब्ला की तरफ़ कर दिये जाएं और सर के नीचे तकिया रख दिया जाए। इस तरह भी चेहरा क़िब्ला की तरफ़ हो जाएगा और अगर इस तरह भी करने में तकलीफ़ हो रही हो तो मरीज़ को उसके हाल पर छोड़ दिया जाए। इसलिये कि ये काम सिर्फ़ मुस्तहब (सवाब वाला) और अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) हैं। कोई वाजिब व फ़र्ज़ नहीं हैं कि इस पर ज़रूर ही अमल किया जाए। (दुर्रे मुख़्तार)

तलक़ीन और उसका तरीक़ा: फ़िर कलिमा–ए–शहादत पढ़ने को कहा जाए इसलिए कि मुस्लिम, अबूदाऊद और तिरमिज़ी में यह रिवायत वारिद हुई है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: अपने मुर्दों (यानि जो जांकनी में मुब्तिला हो) को "लाइलाहा इल्लल्लाह" की तलक़ीन किया करो, नीज़ अबूदाऊद में हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमाया: जिसका आख़िरी कलाम "ला इलाहा इल्लल्लाह" हो वह जन्नत में जायेगा।

और कहने का तरीक़ा यह है कि मरीज़ के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमा–ए–शहादत पढ़ा जाए, मरीज़ से पढ़ने को न कहा जाये, इसलिये कि यह लम्हा बहुत सख़्त होता है। आदेश देने से ख़तरा यह है कि उक्ता कर कोई बेतुकी बात न मुंह से निकाल बैठे।

अगर मौक़ा मिले तो उसके पास सूरह यासीन की तिलावत की जाये,इसलिए कि मुसनद अहमद, अबूदाऊद और नसाई वग़ैरह में हज़रत मुअक़्क़ल बिन यसार रज़ि0 की रिवायत है कि "अपने मुर्दों (मौत के क़रीब लोगों) पर सूरह यासीन पढ़ा करो।"

जब मौत हो जाये:

फिर जब मौत हो जाये तो अब मुन्दरजा ज़ेल काम किये जायें: मरने वाले की आंख बन्द कर देनी चाहिये और कपड़े की एक छोटी सी पट्टी लेकर मैय्यत की ठोड़ी के नीचे से निकाल कर सर पर गांठ लगा देनी चाहिये। बेहतर ये है कि यह काम वह व्यक्ति करे जो उस पर सबसे ज़्यादा मेहरबानी और मुहब्बत का संबंध रखता हो और जितनी नर्मी से मुमकिन हो यह काम करे। आंख बन्द करते समय यह दुआ पढ़े:

"अल्लाह के नाम से और अल्लाह के रसूल (स0अ0) कि मिल्लत पर। या अल्लाह इसपर इसका मामला आसान फ़रमा और जिस तरफ़ निकल कर गया है उसे इस चीज़ से बेहतर बना दे जिससे वह निकल कर गया है।"

इसलिए कि मुस्लिम शरीफ़ की एक रिवायत में है कि नबी करीम (स0अ0) अबू सलमा (रज़ि0) की वफ़ात के बाद उनके पास आये तो उनकी निगाहें फटी हुई थी

तो आप (स0अ0) ने उनको बन्द कर दिया और कहाः रूह जब क़ब्ज़ की जाती है तो निगाह उसके पीछे लग जाती है।"

फिर उसके हाथ–पांव सीधे कर दिये जांए। (और पैरों के अंगूठे मिला कर कपड़े की कतरन वग़ैरह से बांध दें) वरना उस वक़्त पैर सीधे नहीं किये तो बाद में अकड़ जायेंगे, और सीधे करना मुमकिन नहीं रहेगा।

फिर उसे एक चादर उढ़ाकर चारपाई या तख़्त पर रखें। ज़मीन पर न छोड़ें ताकि उसमें बदबू न पैदा हो और उसके पेट पर लोहा या कोई भारी चीज़ रख दें ताकि पेट न फूलने पाये। उसके पास से जुनबी (नापाक), माहवारी या निफ़ास (प्रस्व रक्त) वाली औरत को हटा दें और कोई खुशबुदार (अगरबत्ती या लोबान) उसके पास सुलगा दें। (शामी)

मौत हो जाने के बाद संबंधी क्या करें:

1– यह बहुत ग़म का वक़्त होता है, इस वक़्त हदीस शरीफ़ में एक दुआ पढ़ने को कहा गया है, इस्तहज़ार के साथ इस दुआ को पढ़ने से इंशाअल्लाह ग़म कम होगा। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः जिस मुसलमान को भी कोई मुसीबत पेश आये और वह वही कहे जो अल्लाह ने हुक्म दिया हैः "हम अल्लाह ही के हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं, या अल्लाह मुझे मेरी मुसीबत में अज्र फ़रमा और इसका नेमुल बदल अता फ़रमा" तो अल्लाह तआला उसका नेमुल बदल ज़रूर देता है। इसीलिए जब अबू सलमा रज़ि0 (हज़रत उम्मे सलमा के शौहर) का इन्तिक़ाल हुआ, तो मैंने कहाः मुसलमानों में अबू सलमा से बेहतर कौन है (कि मुझे नेमुल बदल मिल सके) उनका ताल्लुक़ उस पहले घर से था जिसने नबी करीम स0अ0 की तरफ़ हिजरत की, (फिर भी) मैंने यह दुआ पढ़ ली, फिर अल्लाह ने उनका बदल नबी करीम स0अ0 की शक्ल में दिया (इसलिए कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने उनसे निकाह कर लिया था) (मुस्लिम)

2– जिससे मुहब्बत और अक़ीदत का ताल्लुक़ है, उसका बोसा लेना जायज़ है, इसीलिए हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने हज़रत उस्मान इब्ने मज़ऊन रज़ि0 का उनकी मौत के बाद बोसा लिया, हालांकि आप स0अ0 रो रहे थे (या रावी ने कहा कि) आप स0अ0 की आंखें आंसू बहा रही थीं, (तिरमिज़ी, अबूदाऊद, इब्ने माजा) इसी तरह रसूलुल्लाह स0अ0 के विसाल के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने आप स0अ0 की पेशानी का बोसा लिया था। (इब्ने माजा)

3– ग़म की वजह से आंसू बहें या सिसकियां निकल जायें तो ऐन फ़ितरत का तक़ाज़ा है, जब आंहज़रत स0अ0 के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम का इन्तिक़ाल हुआ तो नबी करीम स0अ0 की आंखों से आंसू बह रहे थे, हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ ने अर्ज़ कियाः या अल्लाह के रसूल स0अ0! आप भी (रो रहे हैं) आप स0अ0 ने फ़रमायाः इब्ने औफ़! यह रहम का जज़्बा है। (बुख़ारी, मुस्लिम) लेकिन ग़म मनाने की भी शरई हुदूद हैं, उनको पार करना जायज़ नहीं है। इसीलिए हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि0 की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः (किसी अज़ीज़ की मौत हो जाने पर) जो गालों पर तमांचे मारे, गिरेबान फाड़ डाले, और जाहिलियत के दावे (नौहा वग़ैरह) करे वह हममें से नहीं। (बुख़ारी, मुस्लिम)

एक दूसरी रिवायत में है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः (मुसीबत के वक़्त) जो सर मुंडाए, चीख़कर रोये, और कपड़े फाड़े मैं उससे बरी हूं। (बुख़ारी, मुस्लिम) नीज़ रसूलुल्लाह स0अ0 ने औरतो को मुख़ातिब करके फ़रमायाः शैतानी नौहे से दूर रहो, फिर फ़रमायाः (ग़म का इज़हार) आंख और दिल से हो तो वह अल्लाह की तरफ़ से है और जो हाथ और ज़बान से हो वह शैतान की तरफ़ से है। (मुसनद अहमद)

4– अगर मैय्यत पर क़र्ज़ हो तो जल्द से जल्द उसकी अदायगी की फ़िक्र की जाये, इसलिए कि इब्ने माजा और तिरमिज़ी वग़ैरह में हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 नबी करीम स0अ0 से नक़ल करते हैं कि आप स0अ0 ने फ़रमायाः मोमिन की रूह उसके क़र्ज़ की वजह से मुताल्लिक़ रहती है जब तक कि उसकी अदायगी न कर दी जाये। बाज़ रिवायतों में आया है कि रसूलुल्लाह स0अ0 उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने को तैयार नहीं होते थे जब तक कि मोमिन का क़र्ज़ अदा न कर दिया जाये फिर जब फुतूहात हुईं और आप स0अ0 के पास माल की कसरत हो गयी तो आप स0अ0 मैय्यत के नादार होने की सूरत में ख़ुद देन अदा कर दिया करते थे। (बुख़ारी)

बनीइस्राईल की श्रेष्ठता और उसका परिणाम

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

"इस्राईल" हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) का नाम था। आपके बारह बेटे थे, जिनकी नस्ल ख़ूब फली–फूली। फिर यह बारह बेटे बड़े क़बीले बन गये। हज़रत याकूब की इस पूरी नस्ल को "बनी इस्राईल" कहा जाने लगा।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि0) के हवाले से यह बात बतायी जाती है कि इब्रानी ज़बान में "इस्रा" बन्दे को और "ईल" अल्लाह को कहते हैं। इस लिहाज़ से इस्राईल का मतलब अल्लाह के बन्दे का होता है।

बनी इस्राईल अल्लाह की चुनी हुई क़ौम थी जिसे पहले ख़ालिस दीनी क़यादत और बाद में दीनी व सियासी ख़िलाफ़त बख़्शी गयी। मुसलसल उनमें अम्बिया भेजे जाते रहे। एक लम्बे अर्से तक हज़राते अम्बिया ही दीनी क़यादत के साथ–साथ सियासी क़यादत भी करते रहे। मौजूदा तारीख़ यह बताती है कि उनके अव्वलीन बादशाह तालूत थे जिनका ज़माना हज़रत मूसा के ज़माने के सदियों बाद का है, जबकि कुरआन करीम के अन्दर बयान से मालूम होता है कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) से पहले भी किसी न किसी दर्जे में बनी इस्राईल में किसी न किसी दर्जे में बादशाहत ज़रूर गुज़री है, मूसा (अलैहिस्सलाम) के हवाले से यह कुरआनी बयान मुलाहज़ा होः "जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा; ऐ मेरी क़ौम; अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब अल्लाह ने तुम्हारे अन्दर अम्बिया बनाये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह सब दिया जो दुनिया व जहान में किसी को नहीं दिया।"

हमारे बहुत से तफ़सीर लिखने वाले जो तारीख़ के तनाज़ुर में कुरआन की आयतों का मौक़ा महल तलाश करते हैं, "मुलूका" की तश्रीह में ख़ासी परेशानी का सामना करना पड़ा, बिल आख़िर वे इस तावील पर मुतमईन हो गये कि यहां "मुलूका" से मुराद फ़िरऔन के ज़ुल्म से आज़ादी है, ग़ुलामी की बन्दिशों का टूट जाना और राहत व आज़ादी में सांस लेना गोया एक बादशाहत थी जो बनी इस्राईल को हासिल हुई। यह फ़हमे कुरआन का एक ख़ास तर्ज़ है, लेकिन इससे बेहतर तर्ज़ यह है कि आयाते कुरआनी को बुनियाद बनाकर ख़ुद तारीख़ को तहक़ीक़ के मैदान में उतारा जाये, यह तो सबको मालूम है कि मा क़ब्ले मसीह की तारीख़ में तसलसुल का फ़ुक़दान है। फिर इस अधूरी नामुकम्मल तारीख़ के सहारे कुरआनी आयात को मुनतबक़ करना बज़ाहिर मुनासिब मालूम नहीं होता, लिहाज़ा हम तो यह तस्लीम करें कि बनी इस्राईल में हज़रत मूसा से पहले बादशाहत गुज़री है, "मुलूका" के शब्द इसके लिये सरीह दलील हैं। हज़रत यूसुफ़ जो हज़रत याकूब के बेटे थे, उनकी बादशाहत या इक़्तिदार का तज़किरा ख़ुद कुरआन करीम करता है, क्या यह मुमकिन नहीं कि आपकी वफ़ात के बाद भी आपके ख़ानदान वाले यानि बनी इस्राईल को मिस्र में इक़्तिदार का बराबर का शरीक किया जाता रहा हो, यहां तक कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की पैदाइश के कुछ अर्से पहले अचानक बनी इस्राईल के ख़िलाफ़ दुश्मनी की लहर चल पड़ी हो जिसके नतीजे में पूरी क़ौम को बदतरीन क़िस्म की ग़ुलामी का सामना करना पड़ा हो, यह इम्कान इस तावील से बेहतर नज़र आता है। फिरऔन की ग़ुलामी से आज़ादी के ज़रिये की गयी है। इस इम्कान की दलील यह है कि फ़िरऔन बार–बार अपनी क़ौम को इस बात से डराता रहा कि कहीं मूसा व हारून तुम्हारी तहज़ीब का ख़ात्मा करके तुम्हें इस ज़मीन से बेदख़ल न कर दें: "क़ौमे फ़िरऔन ने कहाः यह दोनों जादूगर हैं, उनकी ग़रज़ यह है कि तुम्हें अपने जादू के ज़ोर से अपनी ज़मीन से बेदख़ल कर दें और तुम्हारे मिसाली कल्चर का ख़ात्मा कर दें।"

फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन का यह ख़ौफ़ बनी इस्राईल की हैसियत को भी बतला रहा है कि वह इतनी ताक़त रखते हैं कि तुम्हारी जगह ख़ुद बरसरे इक़्तिदार आकर तुम्हारी ईंट से ईंट बजा दें, यह अंदेशा उसी क़ौम के ताल्लुक़ से मुमकिन है जो बराबर की ताक़त रखती हो और उसे वह हैसियत हासिल भी रही हो, वरना हज़रत यूसुफ़ के फ़ौरन बाद ही से ग़ुलामी का दौर समझा जाये तो ऐसी ग़ुलाम क़ौम के ताल्लुक़ से इस तरह का अंदेशा बज़ाहिर मुमकिन नज़र नहीं आता। बहरहाल बनी इस्राईल को ख़िलाफ़ते अरज़ी हासिल थी। हज़ारों साल की तवील मुद्दत में उनकी पोज़ीशन ऊपर–नीचे होती रही। लेकिन मुसलसल अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की बेसत और आसमानी किताबों (तहरीफ़ शुदा शक्ल ही में सही) की

मौजूदगी की बुनियाद पर दीनी क़यादत का मन्सब बनी इस्राईल ही को हासिल रहा। लाख मुख़्तलिफ़ हुकूमतें नुमूदार हुईं लेकिन अहले किताब होने की हैसियत से उनको इसका दावा था कि वह चुनी हुई क़ौम हैं। ज़मीन की ख़िलाफ़त के अस्ल मुस्तहिक़ वही हैं और उन्हें अल्लाह की ताईद व हिमायत हासिल है।

रसूलुल्लाह (स0अ0) की बेसत और नुज़ूले कुरआन इसका ऐलान था कि अब मरकज़े ख़िलाफ़त और मन्सबे क़यादत बनी इस्राईल से मुन्तक़िल होकर रसूलुल्लाह (स0अ0) और आपकी उम्मत के पास आ गया है, और बनी इस्राईल को मिनहैसुल क़ौम जो मन्सब हासिल था अब वह क़ौमी शिनाख़्त तारीख़ का हिस्सा बन गयी है। अब यह मन्सब उम्मते मुहम्मदिया हो हासिल होने जा रहा है, इसमें शामिल होने के लिये रास्ते बिल्कुल खुले हैं, बनी इस्राईल भी रसूलुल्लाह (स0अ0) की उम्मत में शामिल होकर इस अज़ीम मन्सब के पासबां बन सकते हैं। इसीलिए कुरआन मजीद में सबसे पहले उन्हीं से ख़िताब करके उनकी पूरी दास्तान ख़ुद उन्हीं को सुनाई गयी है, ताकि उनको मालूम हो जाये कि अपनी बदअहदी, मक्कारी, मुनाफ़क़त, गुस्ताख़ी, अम्बिया की बेहुरमती और किताबों में तहरीफ़ की वजह से वह क़ौमी तौर पर अज़ीम मन्सब से हटा दिये गये हैं, बस उम्मते मुहम्मदिया में शामिल होकर उसका एक हिस्सा बनकर ही वह अपनी अहलियत साबित कर सकते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता उनके लिये बाक़ी नहीं बचा है। इसलिए उनको ख़ासकर के ताकीद की गयी कि इस दावत को वह हरगिज़ न ठुकराएं, यह भी कहा गया कि यह भी उसी तरह ईमान लायें जिस तरह और लोग ईमान लाये तो उनको हिदायत याफ़्ता होने की सनद मिलेगी वरना नहीं मिलेगी।

लेकिन बनी इस्राईल ने अल्लाह की यह दावत क़ुबूल न की, इस पैग़ाम के बाद वे सबसे पहले इसे ठुकराने वाले बने। उन्होंने इस दावत को अपने तश्ख़्ख़ुस के लिये ख़तरा समझा, लिहाजा वह शख़्सी लिहाज़ से रसूलुल्लाह स0अ0 के दुश्मन बने, इस मुबारक पैग़ाम को अपनी क़ौमियत की तौहीन समझा, लिहाज़ा वह क़ौमी तौर पर अरबों के दुश्मन बने, इस दीन को अपने मज़हब का ख़ात्मा समझा, लिहाज़ा मज़हबी तौर पर उम्मते मुहम्मदिया के दुश्मन बने, इस मुबारक किताब को तौरेत का हरीफ़ समझा, लिहाज़ा वह कुरआन के दुश्मन हो गये, अगर वे सच्चाई के ख़्वाहिशमंद होते तो सबसे पहले और सबसे आगे बढ़कर उस दीन को गले लगाते, लेकिन क़ौमी नुख़ूत और मज़हबी ठेकेदारी ने उनके दिलों पर रंग चढ़ा दिया था कि सच्चाई जानने के बावजूद नहीं माने और अपने लिये कुफ़्र और कुफ़्राने नेमत की तारीकियों ही को पसंद किया:

"लेकिन अल्लाह ने उनके कुफ़्र की पादाश में उनपर फिटकार बरसाई, इसलिए वे ईमान नहीं लायेंगे।"

बस एकआध कोई मुसलमान हो तो हो, बनी इस्राईल के वाक़्यात कुरआन मजीद पढ़ने वालों के लिये जाये इबरत हैं कि अल्लाह तबारक व तआला की तरफ़ से मक्कारी व ख़यानत पर एक हद तक ढील दी जाती है। बाद में पूरी क़ौम को गिरा दिया जाता है, अपनी नज़रों से भी और अपने मक़ाम व मर्तबे से भी।

इसीलिए जब मक्का फ़तेह हुआ और मुसलमान आलमी ताक़त बने तो अल्लाह ने सूरह हदीद (जो फ़तेह मक्का के बाद नाज़िल हुई) में मुसलमानों से साफ़–साफ़ फ़रमाया कि वे अहले किताब की तरह न बनें, जिन्होंने अपनी किताब, अपने मन्सब और अपने रसूल सबको छोड़ा, तो उनके दिल सख़्त कर दिये गये और अपनी बदकिरदारी की वजह से हर चीज़ से महरूम कर दिये गये: "अहले ईमान अहले किताब की तरह न बनें, जिन पर (किताब छोड़े हुए) एक दराज़ अरसा गुज़रा फिर उनके दिल सख़्त हो गये और उनकी अक्सरियत फ़ासिक़ निकली।" इसकी भी ताकीद की गयी कि मुसलमान अपने नबी के साथ वह मामला न करें जो मूसा की क़ौम ने मूसा के साथ किया, "ऐ लोगों जो ईमान लाये हो उनकी तरह न बनों जिन्होंने मूसा को अज़ीयत दी तो अल्लाह ने मूसा को उनकी बातों से साफ़ बरी कर दिया जो वह कहते थे, और मूसा तो अल्लाह के नज़दीक बड़ी इज़्ज़त वाले थे।" कुरआन करीम में बनी इस्राईल की तारीख़ का इसीलिए एहतिमाम से तज़किरा किया गया ताकि मुसलमान इससे इबरत हासिल करें। मुसलमानों को बनी इस्राईल की इस तारीख़ से इसीलिए वाक़िफ़ कराया गया ताकि वे हर उस तजुर्बे से महफ़ूज़ रहें जिसकी वजह से क़ौमें उरूज की ऊंचाइयों से ज़वाल की पस्तियों पर दे मारी जाती हैं। यह हुक्म दिया गया कि उम्मते मुस्लिमा हमेशा अपने लिये सीधा रास्ता चाहे। उनका रास्ता जिनपर अल्लाह का इनआम हुआ, नीज़ यह भी हुक्म दिया गया कि यह उम्मत हमेशा यहूद व नसारा के रास्ते सेदूरी बनाये रखे।

तौबा की अहमियत

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

हदीसः "हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः तमाम बनी–ए–आदम ख़तावार हैं, ख़तावारों में सबसे बेहतरीन वे लोग हैं जो तौबा करते रहते हैं।"

फ़ायदाः गुनाहों से पाक होना इन्सानी तबियत से बाहर है, लेकिन क़ाबिले तारीफ़ इन्सान वह है जो अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हो और अल्लाह के दरबार में तौबा करता रहे। तौबा क़ुर्बे इलाही का एक मुअस्सिर ज़रिया है। हक़ीक़ी तौबा के लिये ज़रूरी है कि इन्सान अपने गुनाहों पर दिल से शर्मिन्दा हो और उनसे दिली नफ़रत करे। अल्लाह तआला के अज़ाब और ग़ज़ब का इस्तहज़ार हो और अपनी कमज़ोरी और बेमाएगी का भी पूरा एतराफ़ हो और आइन्दा ग़लत काम न करने का अज़्म हो।

हक़ीक़ी तौबा फ़लाह की ज़ामिन है और इन्सान के क़ल्बी सुकून का सामान है। इससे इन्सान को अल्लाह तआला की रहमत व मुहब्बत हासिल होती है। और ख़ुदा की तरफ़ से उसकी ज़रूरियात पूरी होती हैं। यह भी तौबा के फ़ायदे में शामिल है कि इन्सान की फ़िक्र व सोच भी अक्सर तब्दील हो जाती है और वह अल्लाह के क़रीब तरीन बन्दों में शामिल हो जाता है।

क़ुरआन मजीद में ईमान वालों की तौबा की ख़ास हिदायत है और तौबा करने वालों के भी बुलन्द मक़ामात का बहुत सी जगहों पर तज़किरा है। क़ुरआनी नुक़्ताएनज़र से हुसूले जन्नत का रास्ता सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह के हुज़ूर में सच्ची तौबा करो, उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारी ग़लतियों को मिटा देगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी।"

तौबा का मसनून तरीक़ा यह है कि जब इन्सान से कोई गुनाह सरज़द हो, तो उस पर दिल नादिम हो, और बा वुज़ू दो रकआत नमाज़ पढ़े, फिर इन्तिहाई आजिज़ाना कैफ़ियत के साथ दुआ करे, अगर आंसू जारी न हों तो कम अज़ कम ऐसी सूरत बनाने की कोशिश करे, बहुत सी हदीसों में इस दुआ को पढ़ने की हिदायत भी हैः

"ऐ अल्लाह! तेरी मग़्फ़िरत मेरे गुनाहों से ज़्यादा वसीअ है, और मेरे नज़दीक तेरी रहमत मेरे काम से ज़्यादा उम्मीद की चीज़ है।"

तौबा के सिलसिले में यह बात भी याद रखना चाहिये कि उससे हुक़ूक़ुल्लाह की माफ़ी होती है, अलबत्ता हुक़ूक़ुल्लाह में कोताही से माफ़ी के लिये ज़रूरी है कि साहिबे मुआमला से माफ़ी मांगी जाये और अगर किसी क़िस्म के शर का अंदेशा हो तो अस्ल मौज़ू को छेड़े बिना ही आम माफ़ी मांग ली जाये, लेकिन अगर साहिबे मुआमला मौजूद न हो तो उसकी जानिब से ख़ैर के काम करके भी तलाफ़ी करना भी काफ़ी होगा।

रिवायतों में है कि तौबा अल्लाह तआला के नज़दीक एक महबूब अमल है, और अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा वे लोग पसंद हैं जो गुनाहों के बाद शर्मिन्दगी लेकर उसकी बारगाह में हाज़िर होते हैं। तौबा का दरवाज़ा उस वक़्त तक खुला है जब तक इन्सान की सांस न उखड़ जाये।

अगर इन्सान तौबा न करे और गुनाहों में लगा रहे, तो उससे इन्सानी ज़मीर मुर्दा हो जाता है और ख़ुदा के तज़किरे ही से दिल घबराता है। आमाल की नूरानियत ख़त्म हो जाती है। और उसके रिज़्क़ में बेबरकती रहती है और वह हमेशा मुसीबतों और परेशानियों में गिरफ़्तार रहता है। और उसका दिल भी बहुत सख़्त और बिल्कुल स्याह हो जाता है। कभी कभी ऐसी कैफ़ियत उस शख़्स को कुफ़्र के दहाने पर लाकर खड़ा कर देती है और इन्सान अपनी इन्सानियत से बहुत दूर पहुंच जाता है, मौजूदा दौर में बेचैनी की उमूमी फ़िज़ा और बेबरकती का माहौल, मुसीबतों और परेशानियों से ख़लासी न पाने का बुनियादी सबब तौबा के उसी जौहर से दूरी है। मुसलमानों की एक बड़ी तादाद वह है जो अल्लाह तआला को सज्दा न करके ग़ैरों से माफ़ी की तलबगार है, इसका नतीजा यह है कि तमाम असबाब व वसाएल के बावजूद जिन्दगी का सुकून मफ़्क़ूद है।

इस्राईल नामंज़ूर क्यों?

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

इस वक़्त इस्लामी दुनिया अपनी ज़मीनों पर जिन राजनीतिक समस्याओं का सामना कर रही है उस सूची में प्रथम स्थान पर फ़िलिस्तीनी धरती की समस्या है, जो नबियों (ईश संदेष्टाओं) व औलिया (संतो) का निवास स्थान होने की वजह से बहुत ही बरकत वाली समझी जाती है, जिसके बारे में कहा जाता है: "Too Small Geography But Too Big A History" अर्थात भौगोलिग रूप से तो बहुत छोटी लेकिन ऐतिहासिक रूप से बहुत बड़ी।

फ़िलिस्तीन, भूमध्य सागर के पश्चिमी भाग में स्थित है जहां मुसलमानों की आस्था के जुड़ा हुआ बैतुल मुक़द्दस स्थित है जो अतीत में उस्मानी साम्राज्य का हिस्सा था लेकिन प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यहां के अधिकतर इलाक़ों पर यहूदियों का क़ब्ज़ा है। फ़िलिस्तीन में यहूदियों को आबाद करने में ब्रिटेन का अहम रोल रहा है। बिट्रिश सरकार ने यहूदियों की खुफ़िया संस्था "ज्यूश एजेंसी" को खुली छूट दी थी कि दूसरे देशों से यहूदियों को लाकर यहां बसाएं, और जब नाज़ी जर्मनी और पश्चिमी यूरोप में यहूदियों को उनके करतूतों की सज़ा मिलने लगी तो फ़िलिस्तीन ही उनकी पनाहगाह बना, जिसने धीरे–धीरे एक देश का रूप ले लिया।

नवम्बर 1947ई0 में सयुंक्तराष्ट्र के घोषणापत्र के द्वारा फ़िलिस्तीन का 55 प्रतिशत भाग यहूदियों को दे दिया गया और फिर 14 मई 1948 ई0 को ब्रिटेन और अमरीका की सांठ–गांठ से तिल अबीब के स्थान पर "यहूदियों के कुदरती व ऐतिहासिक अधिकार" के तौर पर इस्राईल राष्ट्र की स्थापना की घोषणा कर दी गयी। इसके बाद सैन्य अभियान द्वारा इस्राईल की सीमाएं 78 प्रतिशत तक बढ़ती चली गयीं। 1967ई0 में संयुक्त राष्ट्र ने दो घोषणापत्रों के द्वारा इस्राईल की पिछली सीमाओं में जाने का आदेश दिया गया मगर इस पर कोई अमल न हुआ, बल्कि निहत्थे फ़िलिस्तीनियों को हर तरह से परेशान करने का सिलसिला चल पड़ा। उनके इलाक़ों में जगह–जगह पर सैन्य चौकियां स्थापित कर दी गयीं। रास्ते अवरुद्ध कर दिये जाते हैं। कर्फ़्यू लगाकर घर–घर की तलाशी ली जाती है। औरतों की इज़्ज़तों से खिलवाड़ किया जाता है। उन्हें बेघर करके कैम्पों में रहने पर मजबूर किया जाता है। फिर उन कैम्पों को भी उनके क़ब्रिस्तान में तब्दील कर दिया जाता है। "जिनीन" नामक कैम्प इसका एक स्पष्ट उदाहरण है।

यहूदियों ने चूंकि फ़िलिस्तीन पर जबरन क़ब्ज़ा किया था, और वहां के लोगों को मजबूर किया था कि वे इस्राईल के अस्तित्व को स्वीकार करें, जिसके परिणामस्वरूप यहूदियों और फ़िलिस्तीनियों के बीच जंग अनिवार्य थी। इसी का नतीजा है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों ने इस्राईल को एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार नहीं किया।

इस्राईल के अस्तित्व को मनवाने के लिये पिछले सात दशकों से यही दावा किया जा रहा है कि फ़िलिस्तीन यहूदियों का पैतृक देश है। 1948ई0 से अब तक इस्राईल के गंभीर अत्याचारों के पीछे यही परिदृश्य रहा है कि अरबों ने यहूदियों को उनके पैतृक निवास से बेदख़ल कर दिया था लेकिन यहूदियों के निकट पैतृकता का यह दृष्टिकोण इस बात की बिल्कुल भी दलील नहीं कि अरबों का इस ऐतिहासिक धरती से कोई संबंध नहीं है। क्योंकि यह सवाल बदस्तूर बना हुआ है कि जब बनी इस्राईल का वजूद ही नहीं था तब यहां कौन सी क़ौम आबाद थी? पुरातत्व विभाग के स्वीकार और ऐतिहासिक दस्तावेज़ों की रोशनी में फ़िलिस्तीन को कनआनियों और यबूसियों ने आबाद किया था जो कि ख़ालिस अरब थे।

1450 ई पू में हज़रत यूशा बिन नून (अलैहिस्सलाम) के नेतृत्व में यहूदी फ़िलिस्तीन की धरती में दाख़िल हुए थे और फिर लगभग चार सौ साल तक वहां आबाद विभिन्न नस्ली गिरोहों से लड़ने और उन्हें पराजित करने में व्यस्त रहे। जिन क़ौमों को पराजित करके उन्होंने अपना राज स्थापित किया था वे अरब ही थे।

फ़िलिस्तीन का यह इलाक़ा यूनान और फिर रोम के साम्राज्य में शामिल एक शांतिप्रिय इलाक़ा था, लेकिन जब यहूदी यहां आबाद हुए तो उन्होंने शासन के ख़िलाफ़ षडयंत्र व विद्रोह शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप अनेक बार यह धरती तहस–नहस हुई और यहां की शांति व अमन भंग हुआ। अन्ततः यहूदी का समापन हुआ, उनकी हत्याएं की गयीं, वे ग़ुलाम बनाये गये तथा फ़िलिस्तीन की धरती से बाहर निकाल दिये गये। लेकिन दुनिया में कहीं भी स्वीकार न कियो जाने के कारण हर बार चोरी–छिपे यहीं आकर बस जाते और अपनी जमीअत क़ायम कर

लेते। आख़िरकार 66 ईसवी में यहूदियों ने रोमी साम्राज्य के ख़िलाफ़ बग़ावत की जिसको कुचलने के लिये रोमी जनरल टाइटस (ज्पजने) ने हमला किया, यहूदियों का क़त्लेआम किया और ज़िन्दा बच जाने वालों का फ़िलिस्तीन में प्रवेश निषेध कर दिया गया। इसके बाद यहूदी पूरी दुनिया में फैल गये। जहां ताक़त मिली वहां ज़ुल्म किया और जहां कमज़ोर पड़े वहां षडयंत्र रचा।

इस पूरे इतिहास की रोशनी में फ़िलिस्तीन एक ख़ासिल अरबी शहर है जिसको दूसरी जातियों के हमलों का सामना करना पड़ा है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसकी मिल्कियत का अधिकार हमलावरों को दे दिया जाये। यदि उन तमाम सालों को एकत्र किया जाये जो यहूदियों ने हमले करते और तबाही मचाते में फ़िलिस्तीन में बिताये तो इतनी मुद्दत भी नहीं बनेगी जितनी अंग्रेज़ों ने भारत में या हालैन्डियों ने इन्डोनेशिया में गुज़ारी। और यदि लाचारी की हालत में एक लम्बा अर्सा किसी इलाक़े में गुज़ारने से उस धरती पर मिल्कियत का अधिकार बनता है तो यहूदियों को चाहिये कि वे फ़िलिस्तीन के बजाय जहां उन्होंने केवल 200 साल गुज़ारे मिस्र की मिल्कियत की मांग करें, जहां उन्होंने 430 साल गुज़ारे तथा इसी तरह मुसलमानों को चाहिये कि वे स्पेन की धरती की मांग करें जहां उन्होंने 780 बरस शासन किया।

है ख़ाक़–ए–फ़िलिस्तीन पर यहूदियों का अगर हक़।
हस्पानिया पे क्यों नहीं हक़ अहले अरब का।।

इस्राईल को स्वीकार न करने का एक मूल कारण यह भी है कि इस्राईल दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी सीमाएं आजतक तय नहीं हो सकीं। बहुत से अरब देश और फ़िलिस्तीनी जनता इस्राईल को सिरे से स्वीकार ही नहीं करती। संयुक्त राष्ट्र ने फ़िलिस्तीन और इस्राईल के बीच जो सरहदें खींची हैं, इस्राईल उन सरहदों को क़ुबूल नहीं करता। सयुंक्त राष्ट्र द्वारा तय की गयी सरहदें कुछ और हैं और इस्राईल के क़ब्ज़े वाले इलाक़े की सरहदें कुछ और। किसी नियम व क़ानून की परवाह किये बिना इस्राईली सेनाएं जिस तरह पूरे फ़िलिस्तीन में दनदनाती फिरती हैं उससे इस्राईली सरहदों का नक़्शा कुछ और ही दिखाई देता है। इसके अलावा इस्राईल और सहयूनी शासकों के इरादों पर आधारित "ग्रेटर इस्राईल" (Greater Isreal) सबसे अलग है। इस नक़्शे में निम्नलिखित इलाक़े शामिल हैंः फ़िलिस्तीन, लेबनान, पश्चिमी सीरिया, दक्षिणी तुर्की। जार्डन, सीना, उत्तरी तुर्की। इराक़ तथा सऊदी अरब के कुछ क्षेत्र।

ग्रेटर इस्राईल की स्थापना के लिये जो मन्सूबा तैयार किया गया उसे आम बोलचाल की भाषा में येनोन प्लान (Yenon Plan) कहा जाता है। इस मंसूबे के तहत ख़ासकर मध्यपूर्व को छोटे–छोटे राज्यों में बदलना है ताकि कोई मज़बूत ताक़त इस्राईल की विरोधी न हो सके। इस मक़सद को पाने के लिये इस्राईल के पड़ोसी देशों को नस्ली, जातीय, धार्मिक आधार पर गृहयुद्ध की आग में धकेल दिया गया। इसी कारण इराक़ के अन्दर कुर्द इलाक़े का बनना, और फिर शिया–सुन्नी के आधार पर इराक़ का बटवारा, सीरिया का गृहयुद्ध इत्यादि सब इस्राईल के तौसीअपसंदाना अमल का हिस्सा हैं और उन सारी तबाहियों की संगीनी को तस्लीम करने के बाद मज़ीद सख़्त हो जायेगी।

इस्राईल को तस्लीम करने से पहले फ़िलिस्तीन के हक़ीक़ी वारिस जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है नीज़ दुनिया भर के सारे मुसलमानों को ख़ासकर "बैतुल मक़दस" के सिलसिले में अपने मौक़िफ़ की नज़रे सानी भी करनी होगी। इसकी दो ही शक्लें हैं या तो इस्राईल को बैतुल मक़दस से दस्तबरदारी पर आमादा करा लिया जाये जो कि नामुमकिन है। या ख़ुद यूटर्न लेकर बैतुलमक़दस को इस्राईलियों के सुपुर्द कर दिया जाये और यह तस्लीम कर लिया जाये कि अब तक कि सारी क़ुर्बानियां और इन्सानी जान व माल की सारी क़ुर्बानियां नाजायज़ और बेमक़सद थीं, यह फ़ैसला करना नामनिहाद हुक्मरानों के लिये तो शायद आसान हो लेकिन उम्मते मुस्लिमा के लिये नामुमकिन है।

ऐतिहासिक प्रमाण और मानवीय क़ानूनों की रोशनी में इस्राईल को स्वीकार करने का कोई जवाज़ नहीं। इस बात को पूरी दुनिया स्वीकार भीा करती हैं। यही कारण है कि अलकुद्स (येरूशलम) का इस्राईली राजधानी स्वीकार करने की अमरीकी प्रस्ताव पूरी तरह से नकार दिया गया और अमरीका की धमकियां भी कोई असर न दिखा सकी।

इस्राईली जारिहत और अमरीकी दबाव के सामने मुसलमानों को किसी समझौते के बजाय अमली एकदार की ज़रूरत है, लेकिन शर्त यह है कि इक़दाम ठोस और हिकमते अमली से पुर हों, और जोश के बजाय होश से तैयार किये गये मंसूबे के तहत हो क्योंकि फ़िलिस्तीन का मसला अब महज़ फ़िलिस्तीनियों या अरबों का नहीं रहा बल्कि यह पूरी उम्मते मुस्लिमा का मसला है।

माता–पिता का आभार प्रकट करना

इनसान जब पैदा होता है तो उसके माता–पिता पर कितना बोझ पड़ता है, विशेषतय: उसकी माता पर, अत: इनसान को अपने पैदा को वाले माता–पिता का आभारी होना चाहिए।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

"और हमने इनसान को उसके माता–पिता के बारे में चेतावनी दी है, उसकी मां ने तकलीफ़ें उठाकर उसको पेट में रखा और दो बरस में उसका दूध छूटता है कि तू मेरा और अपने माता–पिता का आभार प्रकट कर, मेरी ही ओर पलट कर आना है।"

एक जगह आता है:

"कह दो तारीफ़ अल्लाह के लिए है।"

अपने नेक बन्दों के बारे में इस प्रकार कहता है:

"और उनकी आख़िरी बात यह होगी कि सब तारीफ़ अल्लाह की जो तमाम जहानों का पालने वाला है।"

हम्द व शुक्र के कलिमे

अल्लाह तआला ने अपने पाक रसूलुल्लाह स०अ० की ज़बान द्वारा हम्द व शुक्र (प्रशंसा व आभार) के ऐसे कलिमे हमको सिखाए हैं और ऐसी तस्बीह की शिक्षा दी है जिनके पढ़ने से अल्लाह की रज़ा और रसूलुल्लाह स०अ० की मुहब्बत हासिल होती है।

हज़रत समरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया, सभी कलिमों में श्रेष्ठ यह चार कलिमे हैं:

१. सुब्हानल्लाहि
२. अलहम्दुलिल्लाहि
३. लाइलाहा इल्लल्लाहु
४. अल्लाहु अकबर

इन चारों कलिमों में अल्लाह की तारीफ़, पाकी, महानता, बड़ाई का बयान है। यह शब्द अपने आप में एक प्रकार की हम्द व शुक्र हैं। और उनके अदा करने से हम्द व शुक्र अदा होती है। यह कलिमें बहुत ही छोटे और हल्के फुल्के हैं। उनके अदा करने से अल्लाह तआला की सही तारीफ़, उसकी पूरी हम्द और उसका बहुत अधिक शुक्र अदा होता है। जिसने इनको पढ़ा मानो उसके अल्लाह की सारी हम्द व ख़ूबियां बयान कर दीं।

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 02 | FEBRUARY 2018 | VOLUME: 10

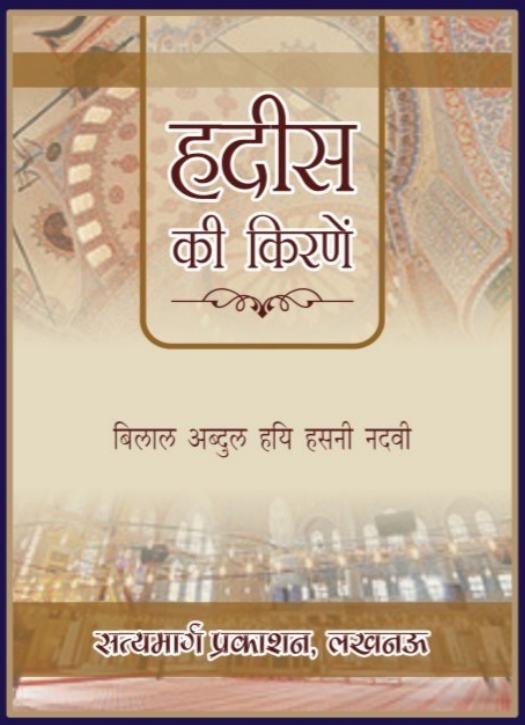

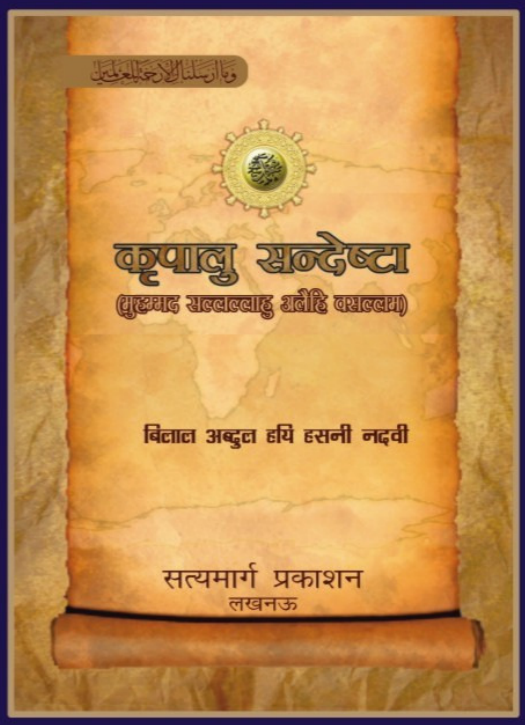

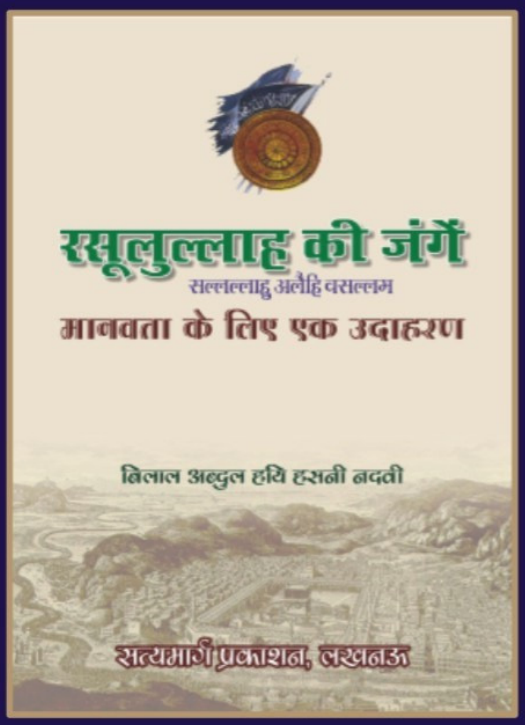

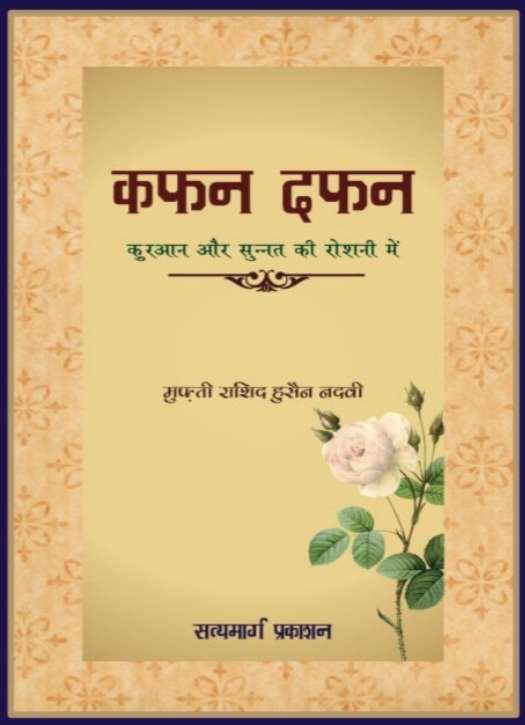

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.